INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

[भाग -2]

भारत + विश्व का इतिहास और कला एवं संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 2

भारत + विश्व का इतिहास और कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp Link- https://wa.link/uwc5lp

Online Order Link- https://bit.ly/3X6MGue

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2023)

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1	**प्राचीनकालीन भारत** भारत के सांस्कृतिक आधार • सिन्धु सभ्यता एवं वैदिक काल ○ महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं ○ सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन • छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	1
2	प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन • नये धार्मिक विचार- ○ आजीवक धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैव धर्म, वैष्णव धर्म, शंकराचार्य , रामानंद, कबीरदास जी, संत रविदास जी, गुरुनानक जी , चैतन्य महाप्रभु जी, नामदेव जी • धर्म दर्शन – ○ चार्वाक दर्शन ○ सांख्य दर्शन ○ योग दर्शन ○ न्याय दर्शन ○ वैशेषिक दर्शन	17

	○ मीमांसा दर्शन ○ वेदान्त • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	
3	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ • मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव एवं चोल • उपर्युक्त राजवंशों का राजनीतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक जीवन • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	37
4	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु • सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं ○ वास्तु कला ○ ललित कला ○ प्रदर्शन कला • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	70
5	प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास • संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल • प्रमुख साहित्यिक रचनायें • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	106

	मध्यकालीन भारत	
1	अरब आक्रमण • मोहम्मद बिन कासिम • महमूद गजनबी • मोहम्मद गौरी • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	125
2	सल्तनतकाल • प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ • विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	129
3	मुगलकाल • राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	147
4	मध्यकाल में कला एवं वास्तु • चित्रकला एवं संगीत का विकास • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	153

5	भक्ति तथा सूफी आंदोलन • धार्मिक एवं साहित्यिक योगदान • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	163
	आधुनिक भारत का इतिहास (प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 1965 तक)	
1	आधुनिक भारत का विकास • यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • मुग़ल साम्राज्य का पतन • मराठा साम्राज्य • गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय एवं उनके कार्य • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	171
2	राष्ट्रवाद का उदय • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • 1857 की क्रांति • बौद्धिक जागरण; प्रेस; पश्चिमी शिक्षा। • 19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन : विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	197

3	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • महत्वपूर्ण घटना क्रम, व्यक्तित्व और मुद्दे • विभिन्न चरण एवं धाराएँ, • महत्वपूर्ण योगदानकर्ता एवं देश के अलग-अलग हिस्सों का योगदान • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	226
4	स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन • देशी रियासतों का विलय • राज्यों का भाषायी पुनर्गठन • नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	286
	आधुनिक विश्व का इतिहास	
1	पुनर्जागरण व धर्म सुधार	306
2	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति (1789 ईस्वी) व औद्योगिक क्रांति	337
3	एशिया व अफ्रीका में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद	372
4	विश्व युद्धों का प्रभाव	395

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय – I

भारत के सांस्कृतिक आधार

- **सिन्धु घाटी सभ्यता**

इतिहास का अध्ययन : –

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है –

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल –

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।

- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया

- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो** की खोज की।

- **सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ –**
- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ो की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।
- मंगोलियन - मोहनजोदड़ो से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।

- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

मैके — मार्शल / नदी में बाढ़ के कारण / एस.आर.राव

व्हीलर — गार्डन चाइल्ड / बाह्य आक्रमण / पिगट

जलवायु परिवर्तन — आरेल स्टाइन / अमला नन्द घोष

प्राकृतिक आपदा - केन्यू. आर. कनेडी

इस सभ्यता का विस्तार→

- इस सभ्यता का विस्तार **पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं ।

मोहनजोदड़ों	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा,** संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**
- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिख्खी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगत्रार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर

INFUSION NOTES WHEN ONLY

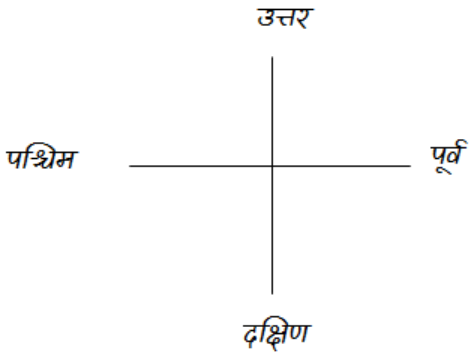

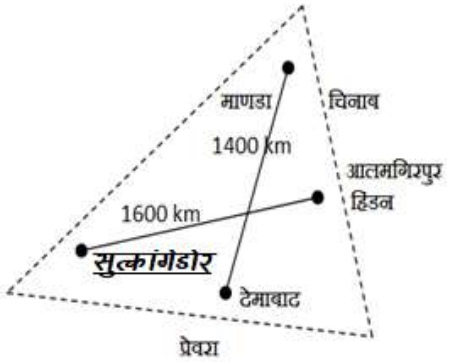

स्थल	नदियों के नाम	उत्खन्न का वर्ष	उत्खननकर्ता	वर्तमान स्थिति
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंडन	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर
  - हड़प्पा
  - बनावली
  - मोहनजोदड़ों
  - धौलावीरा
  - चन्हूदड़ों
  - लोथल
  - कालीबंगा

<u>महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं</u>

- **<u>हड़प्पा</u>**
  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।
  खोज- वर्ष 1921 में

उत्खनन-

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।
ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
iii. 1996 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।

- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।
  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा जोड़ा सही नहीं है?

A. ई. जे. एच. मैके - सुमेर से लोगों का पलायन
B. मार्टीमर व्हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवसन
C. अमलानंद घोष - हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता से हुआ
D. एम.आर. रफीक. मुगल - हड़प्पा सभ्यताने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।

उत्तर – D

मोहनजोदड़ों

- **सिन्धु नदी** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी।
- **उत्खनन** - राखलदास बनर्जी (1922-27)
- मार्शल
- जे.एच. मैके
- जे.एफ. डेल्स
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले **चाँदी के दो सिक्के** मिले हैं ।
- **वस्त्र निर्माण** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है।
  कपास के प्रमाण – मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है । (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खम्भों वाला सभाभवन** मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं ।
- बड़ी संख्या में **कुओं** की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला **विशाल स्नानागार** भी यहीं से प्राप्त हुआ है ।
  मार्शल- आश्चर्यजनक निर्माण

कालीबंगा-

- खोज **अमलानन्द घोष** द्वारा **गंगानगर** में
- **सरस्वती नदी** (वर्तमान **घग्घर** के तट पर)
- कालीबंगा **वर्तमान में हनुमानगढ़** में है ।
- **उत्खनन - बी.बी लाल** 1953 में
  वी. के. थापड़
- कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी है।
- एक साथ **दो फसलों की बुवाई** तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं ।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है ।
- **सड़कों को पक्का** बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है ।
- **युग्म शवाधान** का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं।
- **भूकम्प** आने के प्राचीनतम प्रमाण यहीं से प्राप्त हुए हैं ।
- **वृषभ की ताम्रमूर्ति** भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है ।
- यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।

चन्हूदड़ों-

- खोज- **एन. जी. मजूमदार** – सिन्धु तट पर डकैतों ने हत्या कर दी।
- उत्खनन -**मैके** ने किया ।
- सिन्धु सभ्यता का यह **औद्योगिक शहर** था।
- यहाँ **मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप** के बटखड़े बनाने का काम होता था।

- सिन्धु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले।

लोथल

- **साबरमती एव भोगवा नदी के संगम** पर ज्यादातर हिस्सा भोगवा के तट पर
- खोज एस. आर. राव **(रंग नाथ राव)**
- लघु हड़प्पा
- लघु मोहनजोदड़ों की संज्ञा
- बन्दरगाह या जल भण्डार या **गोदीबाड़ा** यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।
- लोथल का बन्दरगाह ही सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।
- लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार **अग्निवेदी** पाई गई हैं।
- लोथल का मिश्र एवं मेसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।
- लोथल का दुर्ग शासक का आवास था ।

धौलावीरा

- खोज- **जे.पी. जोशी** द्वारा - (1967-68) में मनहर एवं मानसेहरा नदियों के बीच कादिर द्वीप पर खोज की ।
- धौलावीरा एक **आयताकार नगर** था । जो तीन भागों में विभक्त था।
- धौलावीरा से **जल-प्रबंधन के साक्ष्य** प्राप्त हुये हैं।
- भारत के विशालतम सिन्धु सभ्यता स्थल धौलावीरा तथा राखीगढ़ी हैं।
- धौलावीरा से **घोड़े की कलाकृतियों** के अवशेष मिले हैं।

सुरकोटड़ा

- **घोड़े की अस्थियों** के साक्ष्य मिले हैं।
- मिट्टी से बनी घोड़े की आकृति- मोहनजोदड़ों
- घोड़े की हड्डियां- सुरकोटड़ा
- **तीन मृणमूर्तियाँ - लोथल**

बनावली

- **रंगोई नामक नदी** के तट पर
- यहाँ से मिट्टी का हल, बटखरा तथा बहुत सारे **घरों में अग्निकुण्ड** के साक्ष्य मिले।
- बनावली **समृद्ध लोगों का नगर** था।

रोपड़

- **सतलज नदी के बायें तट** पर स्थित
- **आधुनिक नाम रूपनगर**
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सैंधव सभ्यता का उत्खनित स्थल (भारत का)
- खोज-**बी.बी. लाल 1950**
- उत्खनन- **यज्ञ दत्त शर्मा** 1953-56
- रोपड़ से एक ऐसा कब्रिस्तान मिला है जहां **मनुष्य के साथ पालतू कुत्ता भी दफनाया** गया है।

राखीगढ़ी

- भारत में स्थित सबसे बड़ा सिन्धु सभ्यता स्थल

मांडा - उ.प्र.

- 7 नवीनतम उत्खनित स्थल ।
- टकसाल गृह का साक्ष्य ।
- घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य मिले हैं।
- मिट्टी से बनी घोड़े की आकृति- मोहनजोदड़ों
- घोड़े की हड्डियां- सुरकोटड़ा
- तीन मृणमूर्तियाँ - लोथल

अल्लाहदीनो

- यह बिना सुरक्षा दीवार से घिरा हड़प्पा का एक गाँव है।

कुन्तासी

- भारत में प्राप्त विशालतम हड़प्पा कालीन बस्ती।

रोजदी

- रोजदी से हाथी के अवशेष मिले हैं।

बालाकोट

- सीप की बनी चूड़ियों के निर्यात का प्रमुख बन्दरगाह था ।
- सीप उद्योग समृद्ध अवस्था में
- बालाकोट से सेलखड़ी से बनी मुहरें मिली हैं।

सुत्कांगेंदोर

- सिन्धु सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल
- खोज स्टाइन ने की थी ।
- यहाँ का दुर्ग एक प्राकृतिक चट्टान के ऊपर स्थित था ।
- यह एक बन्दरगाह था जो समुन्द्री व्यापार के लिए काम आता था।

सैंधव स्थलों से प्राप्त वस्तुएँ एवं अवशेष वस्तुएँ
(Items and Residues Found at Harappan Sites)

1. वृहत् स्नानागार, अन्नागार, मातृदेवी की मूर्ति, काँसे की नर्तकी की मूर्ति, राज मुद्रांक, तीन मुख वाले

पुरुष की ध्यान मुद्रा वाली मुहर ---- **मोहनजोदड़ों**

2. ताबूतों के शवाधान के साक्ष्य, कब्रिस्तान आर-37, शंख का बना बैल, पीतल की इक्का गाड़ी मजदूरों के आवास, कागज़ का साक्ष्य --- **हड़प्पा**
3. आयताकार 7 अग्नि वेदिकाएँ, जुते खेत के साक्ष्य, चूड़ियाँ, सिलबट्टा, सूती कपड़े की छाप, मनके इत्यादि --- **कालीबंगा** से मिले हैं।
4. गोदीवाड़ा, खिलौना नाव मिट्टी के बर्तन पर चालाक लोमड़ी का चित्रण, धान की भूसी, मनका उद्योग के साक्ष्य, हड़प्पीय संदर्भ में हाथी दांत का पैमाना --- **लोथल** से मिले हैं।
5. वक्राकार ईंटें, कंघा, रंजनश्लाका (लिपस्टिक), चार पहियों वाली गाड़ी, ईंटों पर बिल्ली का पीछा करते कुत्ते के निशान, अलंकृत हाथी इत्यादि ---- चन्हुदड़ों से मिले हैं।
6. खिलौने वाले हल, जौ, तांबे के बाणाग्र -- **बनावली**

- " **सैंधववासी शाकाहारी तथा माँसाहारी** दोनों प्रकार के भोजन का सेवन करते थे।
- **गेहूँ, जौ, चावल, तिल, सरसों, दालें आदि प्रमुख खाद्य फसल थीं।**
- सैंधववासी भेड़, बकरी, सूअर, मुर्गी तथा मछलियों का भी सेवन करते थे।
- शाक-सब्जियाँ, दूध तथा अनेक फल जैसे-खरबूजा, तरबूज, नारियल, नींबू इत्यादि से ये लोग संभवतः परिचित थे।
- खुदाई से मृद्भांडों के अलावा घड़े, तश्तरियाँ, थालियाँ, कटोरे, गिलास, चम्मच आदि बर्तन मिले हैं।

सिन्धु-सभ्यता के प्रमुख बन्दरगाह -

लोथल	-	साबरमती + भोगवा
प्रभासपाटन	-	हिरण्य नदी
मेघम	-	नर्मदा
भगतराव	-	किम
सुत्कांगेडोर	-	दाश्क
सुरकोटदा	-	शादी कौर

सामाजिक जीवन -

- यहाँ पर परिवार मातृसतात्मक होते थे
- वर्ग - विद्वान, योद्धा, व्यापारी, शिल्पकार श्रमिक
- महिलाएं मांग सिन्दूर से भरती थी।
- **पासा व शंतरज का खेल** प्रसिद्ध था।
- मोहनजोदड़ों से प्राप्त कुछ कक्षों को कुम्हारों की बस्ती माना जाता है।

धर्म व धार्मिक विश्वास

- मंदिर व समाधि जैसे अवशेष नहीं मिले
- मोहनजोदड़ों से स्त्री की मूर्ति प्राप्त - पृथ्वी देवी - मार्शल
- **मोहनजोदड़ों से पदमासन की अवस्था में योगी का चित्र** प्राप्त हुआ है।
- लोथल तथा कालीबंगा से अग्निकुण्ड अथवा यज्ञीय वेदियों के साक्ष्य मिले हैं।

कला एवं स्थापत्य

- धातु से बनी एक नर्तकी की मूर्ति मोहनजोदड़ों से प्राप्त हुई है।
- मुहरें सेलखड़ी की बनी होती थी।
- लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।
  बूस्ट्रोफेडन पद्धति
  माप तौल प्रणाली विचर (Binary system)
  1, 24, 8, 16, 32, 64, 160, ...
- **दशमलव पद्धति उपयोग में थी।**
- वाट के रूप में 16 अथवा उनके आवन्तको का व्यवहार होता था।

हड़प्पा सभ्यता या सैंधव सभ्यता का पतन
(Decline of Harappan Civilization or Indus Civilization)

- इस सभ्यता के प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से यह पता चलता है कि अपने अंतिम चरण में यह सभ्यता पतनोन्मुख रही।
- अंततः द्वितीय शताब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया।
- इस सभ्यता के विनाश के बारे में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किये हैं

विभिन्न विद्वानों द्वारा सैंधव सभ्यता के पतन संबंधी मत
(Opinion of Various Scholars Regarding Fall of Harappan Civilization)

आर्यों का आक्रमण ----- **गार्डन चाइल्ड एवं व्हीलर**
पारिस्थितिकी असंतुलन ----- फेयर सर्विस
नदी मार्ग में परिवर्तन ----- एम. एस. वत्स

बाढ़ के कारण ----- आर. राव,मैके, सर जॉनमार्शल
घग्घर का सूख जाना ------ डी.पी. अग्रवाल
भूकंप एवं जल प्लावन ---- राइक्स एवं डेक्स

हड़प्पा सभ्यता की उत्तरजीविता और निरंतरता

- दोस्तों, जैसा कि आपको पता है कि नगरीय सभ्यता के उत्कर्ष होने के कारणों के कमज़ोर होने से सभ्यता का विनाश निश्चित रूप से हो जाता है, परंतु उस सभ्यता की सामाजिक व सांस्कृतिक उच्चताओं का अवसान नहीं होता, बल्कि वे नागरिकों के पलायन के साथ और विस्तृत होती जाती है।
- आज भी धर्म संबंधी अनेक विशेषताएँ, यथा-जल पूजा, वृक्ष पूजा, शिव तथा शक्ति की पूजा, सूर्य पूजा आदि हमारे दैनिक जीवन में सम्मिलित हैं जो सैंधव सभ्यता की ही देन हैं।
- अतः सभ्यता की समाप्ति के बाद भी उसकी सांस्कृतिक उच्चताएँ निरंतर आने वाली सभ्यताओं में परिलक्षित होती हैं।
- व्यापार, परिवहन, नियोजित नगरीय व्यवस्था तथा शिल्प एवं तकनीक की अनेक विधियाँ जो हड़प्पावासियों की देन थीं, आज भी प्रचलित हैं।

ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ (Chalcolithic Cultures)

- भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में दूसरी सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व तक विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों का उदय हुआ।
- ये संस्कृतियाँ न तो शहरी और न ही हड़प्पा संस्कृति की भांति थीं, बल्कि पत्थर एवं तांबे के औज़ारों का इस्तेमाल करना इनकी अपनी विशिष्टता थी।
- अतः ये संस्कृतियाँ ताम्रपाषाण संस्कृति के नाम से जानी जाती हैं।
- तकनीकी रूप से ताम्रपाषाण अवस्था हड़प्पा की काँस्ययुगीन संस्कृति से पहले की है, लेकिन कालक्रमानुसार भारत में हड़प्पा की काँस्य संस्कृति पहले आती है और अधिकांश ताम्रपाषाणकालीन संस्कृतियाँ बाद में।

आहड़ संस्कृति - 2100-1500 ई.पू.

गैरिक मृदभांड संस्कृति - 2000-1500 ई.पू.

कायथा संस्कृति - 2000-1800 ई.पू.

सवालदा संस्कृति - 2000-1800 ई.पू.

मालवा संस्कृति - 1700-1200 ई.पू.

चिरांद संस्कृति - 1500-750 ई.पू.

जोर्वे संस्कृति - 1400-700 ई.पू.

1. **दक्षिण-पूर्वी राजस्थान** -

- राजस्थान में दो पुरास्थलों की खुदाई हुई है, एक पुरास्थल आहड़ (उदयपुर) में और दूसरा पुरास्थल गिलूण्ड (राजसमंद) में है।
- ये पुरास्थल बनास नदी के किनारे स्थित हैं। निर्माण कार्य का साक्ष्य आहड़ से मिला है। आहड़ में घर गारे और पत्थर के बने होते थे।
- घर के नींव में पत्थर का प्रयोग होता था। यहाँ कोई पूरी गृह योजना उपलब्ध नहीं है, लेकिन आहड़ में एक मकान 33 फुट 10 इंच लंबा था और एक कच्ची दीवार से उसे दो हिस्सों में बाँट दिया गया था।
- गिलूण्ड में भंडार गर्त एवं पक्की ईंटों के प्रयोग के साक्ष्य भी मिले हैं। मुख्य मृदभांड काले और लाल रंगों में मिले हैं। परंतु अन्य प्रकार के मृदभांड भी मिले हैं।
- तांबे का प्रयोग व्यापक रूप से प्रचलित था। तांबे की वस्तुओं में अंगूठियाँ, चूड़ियाँ, सुरमे की सलाइयाँ, चाकू के फाल और कुल्हाड़ियाँ प्राप्त हुई हैं। पशुओं की मृण्मूर्तियाँ, मनके, मुहरें इत्यादि भी मिली हैं। हल्के रत्नों के मनके भी प्राप्त हुए हैं।
- आहड़ में चावल की खेती की भी साक्ष्य मिला है। संभवतः आहड़ में बाजरा भी मौजूद था। पशु-अस्थियों में, मछली, कछुए, मुर्गे, गाय, भैंस, बकरी, भेड़, हिरण और सूअर की अस्थियाँ प्राप्त - हुई हैं। रेडियो कार्बन तिथि निर्धारण के आधार पर इस संस्कृति का आरंभ 2000 ई. पू. के आस-पास मान सकते हैं।

2. **मालवा संस्कृति**

- ताम्र पाषाणकाल का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थान मालवा है। यहाँ अनेक स्थलों, जैसे- कायथा, एरण, नागदा और नवदाटोली इत्यादि का उत्खनन हुआ है, जहाँ से ताम्रपाषाण जीवनयापन के चिह्न मिले हैं।

कृष्ण भक्ति

चैतन्य को इनके अनुयायी कृष्ण का अवतार भी मानते रहे हैं। सन् 1509 में जब ये अपने पिता का श्राद्ध करने बिहार के गया नगर में गए, तब वहां इनकी मुलाकात ईश्वरपुरी नामक संत से हुई। उन्होंने निमाई से 'कृष्ण-कृष्ण' रटने को कहा। तभी से इनका सारा जीवन बदल गया और ये हर समय भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहने लगे। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति इनकी अनन्य निष्ठा व विश्वास के कारण इनके असंख्य अनुयायी हो गए। सर्वप्रथम नित्यानंद प्रभु व अद्वैताचार्य महाराज इनके शिष्य बने। इन दोनों ने निमाई के भक्ति आंदोलन को तीव्र गति प्रदान की। निमाई ने अपने इन दोनों शिष्यों के सहयोग से ढोलक, मृदंग, झाँझ, मंजीरे आदि वाद्य यंत्र बजाकर व उच्च स्वर में नाच-गाकर 'हरि नाम संकीर्तन' करना प्रारंभ किया।

नामदेव जी

नामदेव का भक्ति आंदोलन में योगदान

बंगाल के ही समान महाराष्ट्र में भी भक्ति आंदोलन का प्रचार हुआ। यहाँ के मध्ययुगीन सुधारकों में नामदेव का नाम उल्लेखनीय है। उनका जन्म 1270 ई. में सतारा जिले में कन्हाड के समीप नरसीबमनी गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम दामाशेट तथा माता का नाम जोनाबाई था। वे छिपी जाति के थे। नामदेव को भक्ति की प्रेरणा अपने पिता से ही मिली थी। उन्होंने अपना बचपन साधुओं की सेवा तथा सत्संग में व्यतीत किया।

संत **विमोबा खेचर** उनके गुरु थे। **संत ज्ञानेश्वर** के प्रति उनके मन में बड़ा सम्मान था। ज्ञानेश्वर के साथ उन्होंने कई स्थानों का भ्रमण किया तथा साधु-संतो से परिचय प्राप्त किया। उनकी मृत्यु के बाद नामदेव महाराष्ट्र छोड़कर पंजाब के गुरुदासपुर जिले में स्थित घोमन नामक गाँव में जाकर बस गये। यहीं से उन्होंने अपने मत का प्रचार किया । हिन्दू तथा सिख दोनों ही उनके भक्त बन गये । नामदेव भी निरगुणवादी थे। उन्होंने मूर्ति-पूजा तथा धर्म के बाह्याडंबरों का विरोध करते हुये प्रेम, भक्ति एवं समानता का उपदेश दिया। उनका कहना था, कि परमात्मा ही सब कुछ है। उसके अलावा कोई दूसरी सत्ता नहीं है। वही सभी में व्याप्त है। अतः एकान्त में उसी का ध्यान करना चाहिए । भक्ति को उन्होंने मोक्ष का साधन स्वीकार किया। नामदेव की एक भक्त के रूप में महाराष्ट्र तथा उत्तर भारत में इतनी अधिक प्रतिष्ठा थी, की कबीर ने भी आदरपूर्वक उनका स्मरण किया है। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के भी समर्थक थे । सभी जातियों के लोगों को उन्होंने अपना अनुयायी बनाया। वे **मराठी भाषा** तथा साहित्य के प्रमुख कवि थे। मराठी भाषा के माध्यम से उन्होंने महाराष्ट्र की जनता में एक नई चेतना जगाई ।

चार्वाक दर्शन (भौतिकवाद)

चार्वाक दर्शन एक प्राचीन भारतीय भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है तथा यह सिद्धांत पारलौकिक सत्ताओं को स्वीकार नहीं करता है। इसके दर्शन प्रवर्तक चार्वाक ऋषि थे ।

इस दर्शन को वेदबाह्य (चार्वाक, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक, वैभाषिक, और आर्हत(जैन) भी कहा जाता है।

चार्वाक सिद्धांतों के लिए बौद्ध पिटकों में 'लोकायत' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका मतलब 'दर्शन की वह प्रणाली है, जो इस लोक में विश्वास करती है लेकिन स्वर्ग, नरक अथवा मुक्ति की अवधारणा में विश्वास नहीं रखती है।

चार्वाक दर्शन के अनुसार पृथ्वी, जल, तेज तथा वायु ये चार ही तत्त्व सृष्टि के मूल कारण हैं। उनके मत में आकाश नामक कोई तत्त्व है ही नहीं।

इस दर्शन में कहा गया है, कि "यावज्जीवेत सुखं जीवेद ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत, भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः"

अर्थात् जब तक जीना है, सुख से जीना चाहिये, अगर अपने पास साधन नहीं है, तो दूसरे से उधार लेकर सुख से रहना चाहिए , शमशान में शरीर के जलने के बाद शरीर वापस कहां आता है?

चार्वाक दर्शन के प्रमुख मत-

सुखवाद- सर्वदर्शनसंग्रह में चार्वाक के मतानुसार सुख को ही इस जीवन का मुख्य लक्ष्य बताया गया है।

अनात्मवाद- चार्वाक आत्मा को पृथक् कोई पदार्थ नहीं मानते हैं। उनके अनुसार शरीर ही आत्मा है।

इसकी सिद्धि के तीन प्रकार हैं- तर्क, अनुभव और आयुर्वेद शास्त्र।

तर्क से आत्मा की सिद्धि के लिये चार्वाक लोग कहते हैं कि शरीर के रहने पर चैतन्य रहता है और शरीर के न रहने पर चैतन्य नहीं रहता। इस प्रकार शरीर ही चैतन्य का आधार अर्थात आत्मा है यह सिद्ध होता है।

अनुभव 'मैं स्थूल हूँ, 'मैं दुर्बल हूँ, 'मैं गोरा हूँ, 'मैं निष्क्रिय हूँ इत्यादि अनुभव हमें पग-पग पर होता है। स्थूलता दुर्बलता इत्यादि शरीर के धर्म हैं और 'मैं भी वही है। अतः शरीर ही आत्मा है।

आयुर्वेद जिस प्रकार गुड, जौ, महुआ आदि को मिला देने से काल क्रम के अनुसार उस मिश्रण में मद्य उत्पन्न होती है, अथवा दही, पीली मिट्टी और गोबर के परस्पर मिश्रण से उसमें बिच्छू पैदा हो जाता है उसी प्रकार चतुर्भूतों (पृथ्वी, जल, तेज और वायु) के विशिष्ट सम्मिश्रण से चैतन्य (चेतना) उत्पन्न हो जाता है।

धर्म दर्शन

सांख्य दर्शन

भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन प्राचीनतम दर्शन है। इस दर्शन के प्रवर्तक "महर्षि कपिल" हैं। आचार्य गौतम बुद्ध ने भी सांख्य दर्शन का अध्ययन किया। क्योंकि उनके गुरु आलार कलाम सांख्य दर्शन के विद्वान थे। उन्होंने गौतम बुद्ध को सांख्य का उपदेश दिया। जिससे उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और वह घर त्याग कर चले गए।

सांख्य दर्शन मुख्यतः दो (2) तत्वों को मानता है। 1. प्रकृति 2.पुरुष इन दो तत्वों से ही सांख्य दर्शन के अन्य (23) तत्वों की उत्पत्ति होती है। सांख्य में प्रकृति को अचेतन कहा गया है और वहीं पुरुष को चेतन। जब पुरुष का प्रतिबिंब (छाया) प्रकृति के ऊपर पड़ता है। तब सृष्टि प्रक्रिया आरंभ होती है। यह सांख्य दर्शन का मत है।

सांख्य दर्शन में तत्त्व

सांख्य दर्शन में 25 तत्व हैं। इन तत्वों का सम्यक् ज्ञान जीव को जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करता है। सांख्य का अर्थ ही है- तत्वों का ज्ञान। जिससे जीव मुक्ति पा सके। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने सांख्य दर्शन का उपदेश अर्जुन को दिया। सांख्य दर्शन के विभिन्न आचार्य हुए। लेकिन आज के समय में सांख्य दर्शन का जो प्रामाणिक ग्रंथ मिलता है। वह ग्रंथ है- "सांख्य-कारिका"। इसका श्रेय आचार्य ईश्वर कृष्ण को जाता है।

ईश्वर कृष्ण ने अपनी सांख्यकारिका में आचार्य कपिल के सूत्रों (सांख्यसूत्र) को कारिका बद्ध करके पाठकों के लिए सहज और अर्थ दृष्टि से भी सरल बनाया है। सांख्य-कारिका विभिन्न लेखकों, संपादकों द्वारा रचित है। लेकिन डॉ. विमला कर्नाटका द्वारा लिखित सांख्य-कारिका प्रचलित तथा बोधगम्य है।

सांख्य के 25 तत्वों का विवरण -

सांख्य दर्शन में क्रमशः 25 तत्त्व माने गए हैं। पच्चीस तत्त्व हैं- प्रकृति, पुरुष, महत् (बुद्धि), अहंकार, पंच ज्ञानेन्द्रिय (चक्षु, श्रोत, रसना, घ्राण, त्वक्), पंच कर्मेन्द्रिय (वाक्, पाद, पाणि, पायु, उपस्थ), मन, पंच- तंमात्र (रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श) पंच-महाभूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश)।

सांख्य दर्शन सूत्रबद्ध होने की वजह से पढ़ने में कठिन था। लेकिन उसका कारिकाबद्ध होने से पढ़ने में सुविधा हुई। जब तक सांख्य दर्शन सूत्रों में था, तब तक उसे कुछ विद्वान ही पढ़ पाते थे। लेकिन सूत्र से कारिका और कारिका से तत्त्व-कौमुदी के विकास ने सांख्य दर्शन को जीवित कर दिया और उसको अनेक विद्वान व छात्र सहर्ष पढ़ने लगे।

सांख्य दर्शन का प्रमुख सिद्धांत -

सांख्य का मुख्य सिद्धांत सत्कार्यवाद है। जिससे सत् से सत् की उत्पत्ति आदि पांच हेतु माने गए हैं। सांख्य दर्शन ईश्वर को नहीं मानता, इसीलिए इसे निरीश्वरवाद भी कहते हैं। यह दर्शन पुरुष को आत्मा और प्रकृति को माया आदि नामों से पुकारा जाता है।

सांख्य दर्शन का सर्वोत्कृष्ट तत्त्व बुद्धि को माना गया है। जिसे हम महत् के नाम से भी जानते हैं। क्योंकि बुद्धि के द्वारा ही हमें सत्य और असत्य का भान होता है। इसीलिए इसे विवेकी भी कहा गया है। सांख्य में बुद्धि के 8 धर्म बताये गए हैं- धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य एवं अनैश्वर्य। बुद्धि के यह 8 धर्म ही मनुष्य को सद्गति व अधोगति की ओर ले जाने का कार्य करते हैं।

सांख्य दर्शन शास्त्र में मुक्ति -

सांख्य दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति बताई गई है। 1. देह-मुक्ति 2. विदेह-मुक्ति। देह-मुक्ति का तात्पर्य है- शरीर की मुक्ति और विदेह-मुक्ति से तात्पर्य है- जन्म-

मरण प्रक्रिया से सदैव के लिए मुक्ति व सूक्ष्म शरीर की मुक्ति।

सांख्य दर्शन को विभिन्न भारतीय दर्शनों में यत्र-तत्र सर्वत्र पढ़ा जा सकता है। श्रुति लेखानुसार- सभी दर्शनों की उत्पत्ति सांख्य दर्शन से मानी गई है। सर्व प्राचीन दर्शन होने का गौरव सांख्य दर्शन को ही प्राप्त है।

योगदर्शन

पतंजलि योगसूत्र का परिचय

योगदर्शन एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और साधकों के लिये परम उपयोगी ग्रंथ है। जिस प्रकार पूर्व में हमने महर्षि पतंजलि के **सम्पूर्ण जीवन परिचय** वाली पोस्ट में चर्चा की थी की योगसूत्र ग्रंथ महर्षि पतंजलिकृत सभी ग्रंथों में से एक है। इसमें अन्य दर्शनों की भांति खण्डन-मण्डन के लिये युक्तिवाद का अवलम्बन न करके सरलतापूर्वक बहुत ही कम शब्दों में अपने सिद्धांत का निरूपण किया गया है। इस ग्रंथ पर अब तक संस्कृत, हिंदी और अन्यान्य भाषाओं में बहुत भाष्य और टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं।

महर्षि पतंजलि ने **पातंजलि योगसूत्र** ग्रंथ को चार भागों अर्थात् चार अध्यायों में बाँटा है, जिन्हें पाद के नाम से जाना जाता है।

योग दर्शन के चार पाद -

1. समाधिपाद - 51 सूत्र
2. साधनपाद - 55 सूत्र
3. विभूतिपाद - 55 सूत्र
4. कैवल्यपाद - 34 सूत्र

इन चारों पादों का परिचय निम्नलिखित इस प्रकार है-

1. समाधिपाद

योगदर्शन के प्रथम पाद में योग के स्वरूप, लक्षण और योग की प्राप्ति के उपायों का वर्णन करते हुए **चित्तवृत्तियों** के पाँच भेद के साथ उनके लक्षण बतलाये गये हैं। वहाँ सूत्रकार ने निद्रा को भी चित्त की वृत्तिविशेष के अन्तर्गत माना है अन्य दर्शनकारों की भांति इनकी मान्यता में निद्रा वृत्तियों का अभावरूप अवस्था विशेष नहीं है। तथा विपर्ययवृत्ति का लक्षण करते समय उसे मिथ्याज्ञान बताया है। अतः साधारण तौर पर यहीं समझ में आता है कि दूसरे पाद में 'अविद्या' के नाम से जिस प्रधान क्लेश का वर्णन किया गया है वह और चित्त की विपर्ययवृत्ति दोनों एक ही हैं; परंतु गम्भीरता पूर्वक विचार करने पर यह बात ठीक नहीं मालूम होती। ऐसा मानने से जो-जो आपत्तियाँ आती हैं, उनका दिग्दर्शन सूत्रों की टीका में कराया गया है दृष्टा और दर्शन की एकतारूप अस्मिता-क्लेश के कारण का नाम 'अविद्या' है वह अस्मिता चित्त की कारण मानी गयी है)।

इस पाद के सत्रहवें और अठारहवें सूत्रों में समाधि के लक्षणों का वर्णन बहुत ही संक्षेप में किया गया है। उसके बाद इकतालीसवें से लेकर इस पाद की समाप्ति तक समाधि का कुछ विस्तार से फिर से वर्णन किया गया है, परन्तु विषय इतना गम्भीर है कि समाधि की वैसी स्थिति प्राप्त कर लेने के पहले उसका ठीक-ठीक भाव समझ लेना बहुत ही कठिन है।

2. साधनपाद

इस दूसरे पाद में अविद्यादि **पंच क्लेशों** को समस्त दुःखों का कारण बताया गया है, क्योंकि इनके रहते हुए मनुष्य जो कुछ भी कर्म करता है, वे सब के सब संस्काररूप से अन्तःकरण में इकट्ठे होते रहते हैं, उन संस्कारों के समुदाय का नाम ही कर्माशय है। इस कर्माशय के कारणभूत क्लेश जब तक रहते हैं, तब तक जीव को उनका फल भोगने के लिये नाना प्रकार की योनियों में बार-बार जन्मना और मरना पड़ता है एवं पापकर्म का फल भोगने के लिये घोर नरकों की यातना भी सहन करनी पड़ती है। पुण्यकर्मों का फल जो अच्छी योनियों की और सुखभोग संबंधी सामग्री की प्राप्ति है वह भी विवेक की दृष्टि से दुःख ही है।

अतः समस्त दुःखों का सर्वथा अत्यन्त अभाव करने के लिये क्लेशों का मूलोच्छेदन करना अत्यंत आवश्यक है। इस पाद में उनके नाश का उपाय निश्चल और निर्मल विवेकज्ञान को तथा उस विवेकज्ञान की प्राप्ति का उपाय योगसंबंधी आठ अंगों के अनुष्ठान को बताया है। महर्षि पतंजलि के अनुसार इसलिए साधक को चाहिए कि बताये हुए योगसाधनों का श्रद्धापूर्वक अनुष्ठान करे।

3. विभूतिपाद

इस तीसरे विभूतिपाद में धारणा, ध्यान और समाधि इन तीनों का एकत्रित नाम 'संयम' बतलाकर भिन्न-भिन्न ध्येय पदार्थों में संयम का भिन्न-भिन्न फल बतलाया है, उनको योग

अध्याय – 5

प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास

- अपने साहित्यिक अर्थ में, भाषा भाषण के मध्यम से संचार की एक प्रणाली को संदर्भित करती है, ध्वनियों का एक संग्रह जिसे लोगों का एक समूह एक अर्थ के लिए व्याख्या करता है।
- उप-महाद्वीप पर बोली जाने वाली भाषाएँ विभिन्न भाषा परिवारों से निलकी हैं, जिनमें से अधिकांश इंडो-आर्यन हैं।
- इंडो-आर्यन भाषा परिवार प्रथम – यूरोपीय भाषा परिवार से संबंधित है।

प्राचीन भारतीय साहित्य

- **साहित्य-**

वेदांग, सूत्र तथा स्मृति साहित्य

- वेदों को सही ढंग से समझने के लिए वेदांगों की रचना हुई। इनकी संख्या कुल छः है-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद तथा ज्योतिष। ये सभी गद्य में लिखे गए हैं।
- कल्प का अर्थ है- कर्मकांड अर्थात् विधि, नियम। इसके तीन भाग हैं:
  (i) श्रौत सूत्र (600 ई. पूर्व से 300 ई. पूर्व)
  (ii) गृह्य सूत्र (600 ई. पूर्व से 300 ई. पूर्व)
  (iii) धर्म सूत्र (500 ई. पूर्व से 200 ई. पूर्व)
- धर्मसूत्र से सामाजिक व्यवस्था, जैसे- वर्णाश्रम, पुरुषार्थ आदि की जानकारी मिलती है। धर्मसूत्र के प्रणेता स्रोत आपस्तम्ब माने जाते हैं। प्रमुख सूत्रकार गौतम, आपस्तम्ब, बौधायन, वशिष्ठ, सांख्यायन, आश्वालायन आदि हैं, जिसमें गौतम का विशेष महत्त्व है।

क्षेत्र	रचयिता/विकास
शिक्षा	पाणिनी, कात्यायन
व्याकरण	अष्टाध्यायी (पाणिनी)
निरुक्त	(निघण्टु) यास्क
ज्योतिष	लगध, आर्यभट्ट, वराहमिहिर
छन्द	पिंगल
कल्प	गौतम, बौधायन, आपस्तम्ब

- स्मृतियाँ हिंदू धर्म के कानूनी ग्रंथ हैं। ये अधिकांशतः पद्य में लिखी गई हैं-
- सूत्र एवं स्मृति साहित्य एक ऐसे समाज का चित्र उपस्थित करते हैं जहाँ विभाजन का आधार जन्म हो गया तथा समाज में जटिलता आ गई। यह स्थिति छठी ई. पू. के पश्चात् प्रकट हुई।

प्रमुख स्मृतियाँ	रचना काल
मनुस्मृति	200 ई. पू. से 200 ई.
याज्ञवल्क्य स्मृति	100 ई. पू. से 300 ई.
नारद स्मृति	300 ई. पू. से 400 ई.
पाराशर स्मृति	300 ई. पू. से 500 ई.
बृहस्पति स्मृति	300 ई. पू. से 500 ई.
कात्यायन स्मृति	400 ई. पू. से 600 ई.
देवल स्मृति	पूर्व मध्यकालीन

महाकाव्य पुराण एवं शास्त्रीय संस्कृत साहित्य

- महाकाव्य साहित्य के तौर पर वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण तथा वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत की गणना सर्वप्रमुख रूप से होती है।
- महाभारत एक स्वच्छंद कृति है जिसमें चार-चार पंक्तियों के एक लाख श्लोक हैं। रामायण का आकार इससे लगभग एक-चौथाई ही है।
- भगवदगीता महाभारत का दार्शनिक विस्तार है जिसमें कर्म की प्रधानता तथा आत्मा की अमरता पर विशेष व्याख्यान दिया गया है।

- पुराण का शाब्दिक अर्थ है प्राचीन आख्यान, इसके संकलनकर्त्ता महर्षि लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं।
- पुराणों की संख्या 18 मानी जाती है। इनमें वायु पुराण, मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण आदि प्रमुख हैं। इनमें मत्स्य पुराण (अथवा वायु पुराण) सबसे प्राचीन है।
- पुराण अपने वर्तमान रूप में संभवतः ईसा की तीसरी और चौथी शताब्दी में लिखे गए।
- महाकाव्य के क्षेत्र में महानतम विभूति कालिदास (380 ई. से 145 ई. तक) थे। इन्होंने अपनी रचना हेतु मूल विषयवस्तु महाभारत तथा रामायण से ग्रहण किया।
- कालिदास ने कई नाटकों की रचना की जिनमें कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुंतलम् आदि प्रमुख हैं।
- अन्य विशिष्ट कवियों यथा भारवि (550 ई.) ने 'किरातार्जुनीयम्' की रचना की। श्री हर्ष और भट्टी जैसे अनेक कवि हैं जिन्होंने उत्तम रचनाएँ की ।
- काव्य और नाटक का मुख्य प्रयोजन पाठक या दर्शक के मनबहलाव या मनोरंजन (लोकरंजन) के साथ ही उनकी भावनाओं को प्रेरित करना व अंततः उसे अपने जीवन के दर्शन को स्पष्ट करना है।
- कालिदास से पूर्व ही अश्वघोष जैसे बौद्ध विद्वान ने 'बुद्ध चरित' तथा 'सौन्दरानंद' जैसे काव्य की रचना की।
- भारवि और माघ जैसे कवियों ने काव्य की मुख्य विषयवस्तु भी महाभारत से ही ग्रहण की, परंतु दोनों में अंतर यह था कि भारवि ने अपने काव्य में जहाँ शिव को आराध्य बनाया वहीं माघ ने विष्णु को।
- भारवि ने 'किरातार्जुनीयम्' तथा माघ ने शिशुपाल वध नामक महाकाव्य की रचना की।
- आगे की रचनाओं में भट्टनारायण की वेणीसंहार तथा परवर्ती कश्मीरी लेखक कल्हण की 'राजतरंगिणी' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- 12वीं शताब्दी में रचित 'राजतरंगिणी' एक इतिहास परक ग्रंथ है, जिसमें मौर्यकाल से लेकर 1148 ई. तक के कश्मीर के इतिहास की विश्वसनीय जानकारी मिलती है।
- भर्तृहरि की गीतिमय, उपदेशात्मक, दार्शनिक सामग्री श्रृंगारशतक, नीतिशतक तथा वैराग्यशतक में विभाजित है।
- विल्हण ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'विक्रमांकदेवचरित' में तथा जयदेव ने अपनी रचना 'गीत गोविन्द' में गीतात्मक शैली का प्रयोग किया है।
- गद्य उपन्यास को संस्कृत भाषा में लोकप्रिय बनाने में दंडी, सुबन्धु तथा बाणभट्ट का नाम प्रमुख है।
- उत्तरकालीन गद्य उपन्यासों में माधवानल, कामकंदला तथा तिलकमंजरी का नाम प्रमुख है, जिसमें सरल संस्कृत गद्य के बीच-बीच में प्राकृत और संस्कृत के पद्य भी समाहित किये गए हैं।
- **12वीं शताब्दी में रचित 'राजतरंगिणी' एक इतिहास परक ग्रंथ है, जिसमें मौर्यकाल से लेकर 1148 ई. तक के कश्मीर के इतिहास की विश्वसनीय जानकारी मिलती है।**

प्रश्न- संस्कृत की निम्नलिखित में से कौनसी रचनाओं ने महाभारत से अपना कथासूत्र लिया है ? (RAS-2016)

(i) नैषधीयचरित (ii) किरातार्जुनीयम
(iii) शिशुपालवध (iv) दशकुमारचरित
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए -
(A) (i) और (iii)
(B) (ii) और (iii)
(C) (i), (iii) और (iii)
(D) (i), (ii), (iii) और (iv)
उत्तर – (c)

- विल्हण ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'विक्रमांकदेवचरित' में तथा जयदेव ने अपनी रचना 'गीत गोविन्द' में गीतात्मक शैली का प्रयोग किया है।
- गद्य उपन्यास को संस्कृत भाषा में लोकप्रिय बनाने में दंडी, सुबन्धु तथा बाणभट्ट का नाम प्रमुख है।
- उत्तरकालीन गद्य उपन्यासों में माधवानल, कामकंदला तथा तिलकमंजरी का नाम प्रमुख है, जिसमें सरल संस्कृत गद्य के बीच-बीच में प्राकृत और संस्कृत के पद्य भी समाहित किये गए हैं।

वेद	ब्राह्मण	उपनिषद्	उपवेद
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि	ऐतरेय, कौषीतकि	आयुर्वेद
यजुर्वेद	शतपथ	कठोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, मैत्रायणी उपनिषद्, ईशावास्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्	धनुर्वेद
सामवेद	ताण्ड्य जैमिनीय	छांदोग्य, जैमिनीय**वेद**	गंधर्ववेद
अथर्ववेद	गोपथ	मुंडकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मांडुक्योपनिषद्	ब्रह्मवेद, शिल्पवेद

प्रश्न - निम्न में से किन ग्रंथों में प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों (षोडश महाजनपद) की सूची मिलती है ? (RAS-2016)

(i) अर्थशास्त्र
(ii) अंगुत्तर निकाय
(iii) दीर्घ निकाय
(iv) भगवती सूत्र
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए –

कूट :-
(A) (i) और (ii)
(B) (ii) और (iv)
(C) (i), (ii) और (iii)
(D) (ii), (iii) और (iv)
उत्तर – B

नाट्य ग्रंथ

- भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र द्वितीय शताब्दी ईसा. पूर्व का माना जाता है जो संस्कृत नाट्यशास्त्र का सबसे पुराना तथा प्रमाणिक ग्रंथ है।
- इसमें अभिनय, नाट्यशाला, मंच संचालन, संगीत, छंदशास्त्र, अलंकार व रस आदि सभी का सांगोपांग प्रतिपादन किया गया है।
- नाट्यशास्त्र को पंचमवेद भी कहा जाता है।
- कालिदास, अश्वघोष, भास, शूद्रक, भवभूति, भट्टनारायण, मुरारी तथा राजशेखर आदि प्रमुख नाटककार हैं।
- शूद्रक द्वारा रचित 'मृच्छकटिकम्' (चिकनी मिट्टी का ठेला) एक असाधारण नाटक है जिसमें निष्ठुर सत्यता के पुट देखने को मिलते हैं।
- इसके पात्र समाज के सभी स्तरों से लिए गए हैं जिसमें चोर, जुआरी, दुर्जन तथा आलसी व्यक्ति, वैश्याएँ, पुलिस, भिक्षुक एवं राजनीतिज्ञ शामिल हैं।
- घटनाओं की विविधता तथा द्रुत नाटकीय प्रभाव के कारण यह नाटक काफी प्रभावी बन गया है।

प्राचीन भारत की प्रमुख पुस्तकें

कृति	कृतिकार
महाभाष्य	पतंजलि
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
अर्थशास्त्र	कौटिल्य
नीतिसार	कामंदक
काव्यालंकार	भामह
सांख्यकारिका	ईश्वरकृष्ण

पहली शताब्दी ईस्वी में बौद्ध धर्म के विस्तार ने कलात्मक उत्साह को नवीनीकृत किया। इसके परिणामस्वरूप 3 मुख्य कला केंद्रों- गांधार, उत्तरी भारत में मथुरा और आंध्र प्रदेश के आसपास के क्षेत्रों में अमरावती का उद्भव हुआ।

- **गांधार** क्षेत्र पंजाब से अफगानिस्तान की सीमा तक विस्तृत था। यह महायान बौद्ध धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था। गांधार कला शैली का सबसे विशेषीकृत प्रतिरूप आधुनिक अफगानिस्तान में स्थित तक्षशिला और जलालाबाद में पाया जाता है। इस शैली में बुद्ध और बोधिसत्व की सुंदर मूर्तियों को निर्मित किया गया, जिन्हें ग्रीक-रोमन देवीय चरित्रों के समरूप चित्रित किया गया था।
- **मथुरा कला शैली** का विकास पहली और तीसरी शताब्दी ईस्वी के मध्य मथुरा शहर में हुआ और इसे कुषाणों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान किया गया। इस शैली में निर्मित बुद्ध की प्रारंभिक मूर्तियां पूर्वकाल की यक्ष मूर्तियों के प्रतिरूप पर आधारित हैं। इनमें बुद्ध को मज़बूत शरीर से युक्त दिखाया गया हैं। वे बाएं हाथ को कमर पर रखे हुए तथा दाहिने हाथ को अभय मुद्रा में ऊपर उठाये हुए हैं।
- **अमरावती शैली** का विकास सातवाहन शासकों के संरक्षण में आधुनिक आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर स्थित अमरावती में हुआ था। यहाँ दक्षिण भारत का सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप स्थित हैं।
  एलोरा से भगवान बुद्ध की मूर्ति, लिंगराज पल्ली से धर्म चक्र आदि इस कलाशैली की कुछ उत्कृष्ट मूर्तियां हैं। गांधार, मथुरा और अमरावती कला शैली की विशेषताएं निम्नलिखित हैं

	गांधार	मथुरा	अमरावती
प्रभाव	यूनानी या हेलेनिस्टिक, जिसके कारण इसे भारतीय यूनानी कला के रूप में भी जाना जाता है	स्वदेशी	स्वदेशी
बलुआ पत्थर के प्रकार	धूसर/नीला-धूसर बलुआ पत्थर	चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर	सफेद संगमरमर
धार्मिक प्रभाव	मुख्य रूप से बौद्ध; हेलेनिस्टिक यथार्थवाद ।	जैन धर्म, बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और धर्मनिरपेक्ष विषय	
संरक्षण	कुषाण राजवंश	कुषाण राजवंश	सातवाहन और इक्ष्वाकु
मूर्तिकला की विशेषताएं	▪ आध्यात्मिक बुद्ध शांति के भाव का प्रतिनिधित्व करते हैं। ▪ दाढ़ी और मूंछे ▪ कम आभूषण धारण किए हुए ▪ लहराते हुए बाल । (ग्रीक) ▪ चौड़ा ललाट (ग्रीक) । ▪ बुद्ध योगी मुद्रा में आसीन हैं ▪ बड़े कान (ग्रीक) ▪ अध-मुँदे नेत्र ▪ सर पर जटा या उभार को दर्शाया गया है।(जो सर्वज्ञता का प्रतीक है)।	▪ प्रसन्नचित बुद्ध अर्थात कम आध्यात्मिक ▪ चेहरा और सिर मुंडा हुआ । ▪ तंग वस्त्र धारण किए हुए हैं और शरीर ऊर्जावान है। ▪ चेहरा विनीत भाव दर्शाता है। ▪ बुद्ध पद्मासन मुद्रा में आसीन हैं। ▪ दाहिना हाथ अभय मुद्रा में (आश्वासन को दर्शाते हुए) में कंधे के ऊपर उठाया गया है और बायां हाथ बायीं जांघ सर पर जटा या उभार पर है (हृष्ट-पुष्टता को दर्शाता को दर्शाया गया है)	

		▪ सर पर जटा या उभार को दर्शाया गया है।	

गुप्त काल की प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ

गुप्त काल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। बार्नेट के अनुसार 'प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्त काल का वह महत्त्व है जो यूनान के इतिहास में पेरिक्लीयन युग का है।' स्मिथ ने गुप्त काल की तुलना ब्रिटिश इतिहास के 'एलिजाबेथ' तथा 'स्टुअर्ट' के कालों से की है। गुप्त काल को श्रेष्ठ कवियों का काल माना जाता है। इस काल के कवि को दो भागों में बांटा गया है,-

- प्रथम भाग में वे कवि आते हैं जिनके विषय में हमें अभिलेखों से जानकारी मिलती है हालांकि इनकी किसी भी कृति के विषय में जानकारी नहीं है। इस श्रेणी में हरिषेण, शाव(वीरसेन), वत्सभट्टि और वासुल आते हैं।
- द्वितीय श्रेणी में वे कवि आते हैं जिनकी रचनाओं के बारे में हमें ज्ञान है, जैसे कालिदास, भारवि, भट्टि, मातृगुप्त, भर्तृश्रेष्ठ तथा विष्णु शर्मा आदि।

हरिषेण

महादण्डनायक ध्रुवभूति का पुत्र हरिषेण **समुद्र गुप्त के** समय में सान्धिविग्रहिक कुमारामात्य एवं महादण्डनायक के पद पर कार्यरत था। हरिषेण की शैली के विषय में जानकारी 'प्रयाग स्तम्भ' लेख से मिलती है। हरिषेण द्वारा स्तम्भ लेख में प्रयुक्त छंद कालिदास की शैली की याद दिलाते हैं। हरिषेण का पूरा लेख 'चंपू (गद्य-पद्य-मिश्रित) शैली' का एक अनोखा उदाहरण है। इनके द्वारा रचित **महाकाव्य** –

शाव (वीरसेन)

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में सान्धिविग्रहिक अमात्य पद पर कार्यरत शाव की काव्य शैली के विषय में जानकारी एकमात्र स्त्रोत 'उदयगिरि गुफा की दीवार पर उत्कीर्ण लेख है। लेख के आधार पर यह माना जाता है कि शाव व्याकरण, न्याय एवं राजनीति का ज्ञाता एवं **पाटिलिपुत्र** का निवासी था।

वत्सभट्टि

इनकी काव्य शैली के विषय में जानकारी मालव संवत के 'मंदसौर के स्तम्भ' लेख से मिलती है। इस लेख में कुल ५५ श्लोक हैं, जिनमें पहले तीन श्लोकों में सूर्य स्तुति की गई है।

वासुल ने मंदसौर प्रशस्ति की रचना यशोधर्मन के समय में की। कुल ९ श्लोकों वाला यह लेख श्रेष्ठ काव्य का अनोखा उदाहरण है।

कालिदास

संस्कृत साहित्य के इस महान कवि की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश महाकाव्य कालिदास की सर्वोत्कृष्ट कृति उनका नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' है। इसके अतिरिक्त उन्होंने मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् नाटक की भी रचना की है।

भारवि

'किरातार्जुनीयम्' महाभारत के वनपर्व पर आधारित है इसमे कुल 18 सर्ग है।

भट्टि

इनके द्वारा रचित '**भट्टिकाव्य**' को 'रावणवध' भी कहा जाता है। **रामायण** की कथा पर आधारित इस काव्य में कुल 22 सर्ग तथा 1624 श्लोक है।

गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

नाटक	नाटककार	नाटक का विषय
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास	अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है।
विक्रमोर्वशीयम्	कालिदास	सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	कालिदास	दुष्यंत तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित

मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है।
देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शाकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसंतसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वेश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है।
स्वप्नवासवदत्तम	भास	इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।
प्रतिज्ञायौगंधरायणकम्	भास	महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है।
चारुदत्तम्	भास	इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है।

मातृगुप्त

इनके विषय में जानकारी कल्हण के राजतरंगिणी से मिलती है। संभवतः मातृगुप्त ने भरत के नाट्य-शास्त्र पर कोई टीका लिखी थी।

भर्तृभेण्ठ

'हस्तिपक' नाम से भी जाने वाले इस कवि ने 'हयग्रीववध' काव्य की रचना की।

विष्णु शर्मा

विष्णु शर्मा के द्वारा रचित काव्य 'पंचतंत्र' के विश्व की लगभग 50 भाषाओं में 250 भिन्न - भिन्न संस्करण निकल चुके हैं। पंचतंत्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ 'बाइबिल' के बाद दूसरे स्थान पर की जाती है। 16 वीं सदी के अंत तक इस ग्रंथ का अनुवाद यूनान, लैटिन, स्पेनिश, जर्मन एवं अंग्रेज़ी भाषाओं में किया जा चुका था। पंचतंत्र 5 भागों में बंटा है-

1. मित्रभेद,
2. मित्रलाभ.
3. सन्धि-विग्रह,
4. लब्ध-प्रणाश,
5. अपरीक्षाकारित्व।

गुप्तकाल के धार्मिक ग्रंथ

पुराण

पुराणों के वर्तमान रूप की रचना गुप्त काल में ही हुई, इनमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख मिलता है। पुराणों का अंतिम रूप से संकलन भी गुप्त काल में हुआ है। दो महान गाथा काव्य रामायण और महाभारत ईसा की चौथी सदी (गुप्तकाल) में पूरे हो चुके थे। अतः इनका संकलन गुप्त युग में ही हुआ। 'रामायण' में परिवार रूपी संस्था का आदर्श रूप वर्णित है। 'महाभारत' में दुष्ट शक्ति पर इष्ट शक्ति की विजय दिखाई गई है। 'भगवद्गीता' प्रतिफल की कामना के बिना कर्त्तव्य पालन के निर्देश देती है।

स्मृतियां

गुप्त काल में याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, एवं बृहस्पति की स्मृतियां लिखी गई। इनमें 'याज्ञवल्क्य स्मृति' सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। इस स्मृति में आचार, व्यवहार, प्रायश्चित आदि का उल्लेख है। **हीनयान** (बौद्ध धर्म) शाखा के 'बुद्ध घोष' ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा, इनका प्रसिद्ध ग्रंथ 'विसुद्दिभग्ग' है। जैन दार्शनिक आचार्य 'सिद्धसेन' ने **न्याय दर्शन** पर 'न्यायवताम्' ग्रंथ लिखा है।

"सारांश"

- कल्प से तात्पर्य कर्मकांड से है अर्थात् विधि नियम।
- स्मृतियाँ हिंदू धर्म के कानूनी ग्रंथ है, यह अधिकांशतः पद्य में लिखी गई है।
- भारवि ने 'किरातार्जुनीयम्' की रचना की तथा माघ ने शिशुपाल वध नामक महाकाव्य की रचना की।
- भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र सबसे पहले पुराना तथा प्रमाणिक ग्रंथ है, जो नाट्यशास्त्र का पंचम वेद भी कहलाता है।
- 600 ई. में वाग्भट्ट ने 'अष्टांगहृदय' की रचना की।
- बौद्ध धर्म का वैधानिक साहित्य पालि में है, जिसे त्रिपिटक कहा जाता है। जो कि विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक है।
- बौद्धों की गीता नाम से प्रसिद्ध 'धम्मपद' का संबंध सुत्त पिटक नामक दूसरे बौद्ध धर्म महाग्रंथ से है।
- प्राकृत भाषा में जैनों का प्रचुर साहित्य लेखन हुआ, जिसे जैन आगम कहते हैं।

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. निम्न में से कौनसा वेद रागों (मेलोडीज) का संग्रह है?

A. ऋग्वेद B. यजुर्वेद
C. सामवेद D. अथर्ववेद
उत्तर – C

प्रश्न-2. प्रसिद्ध गायत्री मंत्र किसमें उल्लेखित है?

A. कठोपनिषद् B. छांदोग्य उपनिषद्
C. ऋग्वेद संहिता D. ऐतरेय ब्राह्मण
उत्तर – C

प्रश्न-3. 'त्रिपिटक' ग्रंथ किस धर्म से संबंधित है?

A. वैदिक B. बौद्ध
C. जैन D. शैव
उत्तर – B

प्रश्न-4. इंडिका का लेखक कौन था?

A. चाणक्य B. सिकंदर
C. मेगस्थनीज D. सेल्यूकस
उत्तर –C

प्रश्न-5. 'अरमाईक' क्या है?

A. स्थान B. कला
C. भाषा D. लिपि
उत्तर – **D**

प्रश्न-6. संगम साहित्य किस भारतीय भाषा से जुड़ा है ?

A. तमिल B. तेलुगू
C. मराठी D. बंगाली
उत्तर – A

प्रश्न-7. अष्टाध्यायी का लेखक था?

A. वराहमिहिर B. कालिदास
C. पाणिनी D. बलराम
उत्तर – C

प्रश्न-8. पंचतंत्र के लेखक है?

A. विष्णु शर्मा B. प्रेमचंद्र
C. सूरदास D. कालिदास
उत्तर – A

प्रश्न-9. निम्न में से कौनसी पुस्तक कालिदास ने नहीं लिखी है?

A. अभिज्ञान शकुंतलम् B. रघुवंश
C. मालविकाग्निमित्र D. देवी चंद्रगुप्तम्
उत्तर – D

प्रश्न-10. 'नाट्यशास्त्र' के रचयिता कौन थे?

A. भरत मुनि B. नारद मुनि
C. झंडु मुनि D. व्यास मुनि
उत्तर – A

प्रश्न-11. 'नागानंद' 'रत्नावली', 'प्रियदर्शिका' के लेखक थे?

A. बाणभट्ट B. विशाखदत्त
C. वात्सायन D. हर्षवर्धन
उत्तर – D

प्रश्न-12. 'सांप सीढ़ी का खेल' का संबंध किस भारतीय विद्वान से है?

A. भास्कराचार्य B. आर्यभट्ट
C. बैद्यायन D. ज्ञानदेव
उत्तर – D

मुख्य परीक्षा

1. प्राचीन भारत के किन तीन ग्रंथों को प्रस्थान त्रयी कहा जाता है?

2. प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक साहित्य पर निबंध लिखिए।

मध्यकालीन भारत

अध्याय - 1

अरब आक्रमण

- **मध्ययुगीन भारत**, "प्राचीन भारत" और "आधुनिक भारत" के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की लम्बी अवधि को दर्शाता है।
- पाल राजा धर्मपाल, जो गोपाल के पुत्र थे, ने आठवीं शताब्दी ए.डी. से नौवीं शताब्दी ए.डी. के अंत तक शासन किया।
- **धर्मपाल द्वारा नालन्दा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना इसी अवधि में की गई।**
- **भारत और अरब के बीच 7वीं सदी में ही संपर्क आरम्भ हो गये थे। लेकिन राजनीतिक संबंध 712 ई. में सिंध पर आक्रमण के दौरान स्थापित हुआ।**
- गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चालुक्यों की प्रतिष्ठा की स्थापना उनके द्वारा अरबों का विरोध करने के कारण हुई। **अरबों का दीर्घकालिक महत्व यह था कि उन्होंने भारत में धर्म की स्थापना न करके धार्मिक सहिष्णुता का प्रदर्शन किया। हालांकि जजिया कर लिया जाता था।**
- **अरबों का भारत पर पहला आक्रमण खलीफा उमर के काल में 636 ई. में बम्बई के थाना पर हुआ जो कि असफल रहा।**
- **अरबों का भारत का प्रथम सफल अभियान 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में हुआ।**
- मुहम्मद-बिन-कासिम ने दाहिर को हराकर 'सिन्ध' पर कब्जा कर लिया।
- कासिम ने 'मुल्तान' पर भी कब्जा कर लिया तथा इसका नाम सोने का शहर रखा।
- **मुहम्मद बिन कासिम ने भारत में सर्वप्रथम जजिया कर लागू किया।**
- जजिया कर इस्लाम को न स्वीकार करने वाले यानि गैर-मुस्लिमों से वसूला जाता था ।
- मुहम्मद बिन कासिम ने सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण कराया ।
- अब्बासी खलीफाओं ने बगदाद (इराक) को अरब जगत की राजधानी घोषित किया।
- खलीफा हारून रशीद ने चरक संहिता का अरबी अनुवाद कराया।
- अरबों ने अंक, दशमलव तथा गणित के सिद्धांतों को सीखा।

अध्याय – 3
मुग़ल काल

- राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा
- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी। **गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुग़ल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।**
- **मुग़ल वंश का संस्थापक बाबर था,** अधिकतर मुग़ल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, **मुग़ल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।**

बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.)

- **बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।**
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। **बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।**
- **पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।
- **घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।

नोट :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।

- **उसकी विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।**
- **पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।**
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों 'को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर **अपने आप को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।**
- **पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्त्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण** की थी। इस युद्ध के लिए **अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।**
- साथ ही **मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी,** यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुक-ए- बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।

- ***बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है।*** साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। ***साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।***
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में ***'आरामबाग'*** के नाम से जाना जाता है। इसमें ***चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है।***
- यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।

<u>हुमायूँ (1530 ई. - 1556 ई.)</u>

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुग़ल वंश के शासन पर बैठा ।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- ***हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खां था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।***
- हुमायूँ का अफगानों से ***पहला मुकाबला 1532 ई. में दौहरिया 'नामक स्थान पर*** हुआ। इसमें ***अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।***
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खां की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुग़ल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौंसा के युद्ध में शेर खां ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खां ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1545 ई. में हुमायूँ ने कामरान से काबुल और गंधार छीन लिया।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 ई. को पुस्तकालय की सिढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- ***लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"***
- बैरम खां हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासन तथा पुनः राज सिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।

<u>शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.)</u>

- ***बिलग्राम के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर 1540 ई. में 67 वर्ष की आयु में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।*** इसने मुग़ल साम्राज्य की नींव उखाड़ कर भारत में अफगानों का शासन स्थापित किया।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। शेरशाह का पिता हसन खां जौनपुर का एक छोटा जागीरदार था।
- ***1539 ई. में बंगाल के शासक नुसरत शाह को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'हजरत-ए-आला' की उपाधि धारण की ।***
- 1539 ई. में चौंसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'शेरशाह' की उपाधि धारण की ।
- 1540 में दिल्ली की गद्दी पर बैठने के बाद शेरशाह ने सूरवंश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।

- शेरशाह ने अपनी उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए 'रोहतासगढ़' नामक एक सुदृढ़ **किला बनवाया।**
- **1545 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया ।** इसमें उसे बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। **इस युद्ध में राजपूत सरदार' जैता 'और' कुप्पा' ने अफगान सेना के छक्के छुड़ा दिए।**
- 1545 ई. में शेरशाह ने कालिंजर के मजबूत किले का घेरा डाला, जो उस समय कीरत सिंह के अधिकार में था, परन्तु 22 मई 1545 को बारूद के ढ़ेर में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड (पेशावर से कलकत्ता) की मरम्मत, करवाकर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाया।
- शेरशाह का मकबरा बिहार के सासाराम में स्थित है, जो मध्यकालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद भी सूर वंश का शासन 1555 ई. में हुमायूँ द्वारा पुनः दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने तक कायम रहा ।

<u>अकबर (1556 – 1605 ई.)</u>

हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अकबर का कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी, 1556 को मात्र 13 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ।

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरमाल के प्रसिद्ध महल में हुआ था।
- **अकबर ने बचपन से ही गजनी और लाहौर के सूबेदार के रूप में कार्य किया था ।**
- भारत का शासक बनने के बाद 1556 से 1560 तक अकबर बैरम खां के संरक्षण में रहा।
- **अकबर ने बैरम खां को अपना वजीर नियुक्त कर खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की थी।**
- 5 नवम्बर, 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का मुकाबला अफगान शासक मुहम्मद आदिल शाह के योग्य सेनापति हैमू की सेना से हुआ, जिसमें हैमू की हार एवं मृत्यु हो गयी।
- **1560 से 1562 ई. तक दो वर्षों तक अकबर अपनी धाय मां महम अनगा,** उसके पुत्र आदम खां तथा उसके सम्बन्धियों के प्रभाव में रहा। **इन दो वर्षों के शासनकाल को पेटीकोट सरकार की संज्ञा दी गयी है।**
- **अकबर ने 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की।** इस्लामी विद्वानों की अशिष्टता से दुखी: होकर **अकबर ने 1578 ई. में इबादतखाना में सभी धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित करना शुरू किया।**
- 1582 ई. में अकबर ने एक नवीन धर्म तौहीद-ए-इलाही 'या' दीन-ए-इलाही' की स्थापना की, जो वास्तव में विभिन्न धर्मों के अच्छे तत्वों का मिश्रण था।
- **अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयत्न किया, साथ ही विधवा विवाह को क़ानूनी मान्यता दी।** अकबर ने लड़कों के विवाह की उम्र 16वर्ष और लड़कियों के लिए 14वर्ष निर्धारित की।
- अकबर **ने 1562 ई. में दास प्रथा का अंत किया** तथा **1563 में तीर्थ यात्रा पर से कर को समाप्त कर दिया।**
- अकबर ने 1664 ई. में **जजिया कर समाप्त कर** सामाजिक सदभावना को सुदृढ़ किया।
- 1579 ई. में अकबर ने मजहर 'या अमोघवृत्त की घोषणा की।
- अकबर ने **गुजरात विजय की स्मृति में फतेहपुर सीकरी में बुलन्द दरवाजा 'का निर्माण कराया** था।
- अकबर ने 1575-77 ई. में सम्पूर्ण साम्राज्य को 12 सूबों में बांटा था, जिनकी संख्या बराड़, खानदेश और अहमद नगर को जीतने के बाद बढ़कर 15 हो गयी।
- अकबर ने सम्पूर्ण साम्राज्य में एक सरकारी भाषा (फारसी), एक समान मुद्रा प्रणाली, समान प्रशासनिक व्यवस्था तथा बाँट, माप प्रणाली की शुरुआत की।
- **अकबर ने 1574 -75 ई. में मनसबदारी प्रथा' की शुरुआत किया ।**

जहाँगीर (1605 ई. - 1627 ई.)

- 17 अक्टूबर 1605 को अकबर की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सलीम जहाँगीर के नाम से गद्दी पर बैठा ।
- गद्दी पर बैठते ही सर्वप्रथम 1605 ई. में जहाँगीर को अपने पुत्र खुसरो के विद्रोह का सामना करना पड़ा। जहाँगीर और खुसरो के बीच भेरावल नामक

6. निम्नलिखित विद्रोहों पर विचार कीजिए

1. बुन्देला विद्रोह
2. जाट विद्रोह
3. अंग्रेजों का विद्रोह

उपरोक्त विद्रोह निम्नलिखित में से किस मुगल बादशाह के काल में हुए?

(a) अकबर (b) शाहजहाँ
(c) बहादुरशाह (d) औरंगजेब

उत्तर – d

7. निम्नलिखित राज्यों में से कौन-सा शाहजहाँ के काल में मुगल साम्राज्य में मिलाया गया?

1. बीजापुर
2. अहमदनगर
3. गोलकुण्डा

कूट

(a) 1 और 2 (b) केवल 2
(c) केवल 3 (d) 1 और 3

उत्तर – b

अध्याय – 4

मध्यकाल में कला एवं वास्तु

(1) बाबर की स्थापत्य कला –

- बाबर भारतीय स्थापत्य कला को अच्छा नहीं समझता था, इसीलिए उसे आगरा व दिल्ली में भारतीयों द्वारा बनवाई गई इमारतें पसन्द नहीं आई।
- बाबर ने भवनों के निर्माण के लिए कुस्तुनतुनिया से कारीगरों को बुलवाया । बाबर ने आगरा, अलीगढ़, सीकरी, धौलपुर, बयाना, ग्वालियर आदि स्थानों पर कुएँ, तालाब, फब्बारे आदि बनवाए। बाबर द्वारा बनवाए गए निम्नलिखित दो भवन ही आज दिखाई देते हैं।

(i) पानीपत की काबुली मस्जिद, और (ii) सम्भल की जामा मस्जिद।

ये दोनों मस्जिदें 1526 ई. में बनवाई गई थीं। इन मस्जिदों में कोई विशेष नमूना नहीं है।

(2) हुमायूँ की स्थापत्य कला –

- हुमायूँ का अधिकांश जीवन युद्धों व भाग-दौड़ में बीता, अतः उसे इमारतें बनवाने का समय नहीं मिला । फिर भी **हुमायूँ ने 'दीन-ए-पनाह' नामक महल दिल्ली में बनवाया।**
- शेरशाह सूरी ने शायद इसे नष्ट कर दिया। हुमायूँ ने फतेहाबाद व आगरा में भी मस्जिदें बनवाई। **स्थापत्य कला की एक महत्त्वपूर्ण इमारत हुमायूँ का मकबरा है।** यद्यपि इसका निर्माण अकबर के प्रारम्भिक शासनकाल में हुआ, परन्तु यह हुमायूँ के काल की इमारत है। यह मकबरा ईरानी और भारतीय शैलियों के मिश्रण का नमूना है। इसमें फारसी शैली का प्रभाव भी है। '

(3) शेरशाह की स्थापत्य कला –

- **शेरशाह-वास्तुकला का बहुत प्रेमी था।** वह प्रत्येक शहर में एक किला बनवाना चाहता था और मिट्टी की बनी हुई सरायों को पक्के मकानों में बदलकर उन्हें राज्य की सुरक्षा करने की चौकियाँ बनाना चाहता था। दिल्ली का पुराना किला शेरशाह सूरी द्वारा बनवाया हुआ है।
- **शेरशाह सूरी द्वारा बनवाई गई प्रसिद्ध इमारतों में शेरशाह का मकबरा भी है।**

(4) अकबर की स्थापत्य कला –

- मुगलों की स्थापत्य कला सही अर्थ में अकबर के शासनकाल से प्रारम्भ होती है। **अकबर ने अपनी स्थापत्य कला में ईरानी व भारतीय कला का**

समन्वय स्थापित किया। अकबर के काल की सभी इमारतें लाल पत्थर की हैं और सजावट के लिए संगमरमर का प्रयोग किया गया है।

- अकबर द्वारा बनवाए गए भवन या इमारतें निम्न प्रकार हैं

(i) आगरे का लाल किला
(ii) जहाँगीरी महल
(iii) अकबरी महल
(iv) लाहौर का किला,
(v) इलाहाबाद का किला,
(vi) दीवान-ए-आम
(vii) जोधाबाई का किला,
(viii) बीरबल का महल
(ix) पंचमहल, यह भी सीकरी में है और हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य का मिश्रण
(x) **जामा मस्जिद,** इसका निर्माण 1571 ई. में हुआ। **यह चित्रकारी की दृष्टि से फतेहपुरी सीकरी की सर्वश्रेष्ठ इमारत है।**
(xi) बुलन्द दरवाजा, इसे अकबर ने गुजरात की विजय के बाद बनवाया था। यह फतेहपुर सीकरी में स्थित है और मुग़ल कालीन दरवाजों में श्रेष्ठ है।
(xii) **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा,** यह 1571 ई. में बना था। इसकी चित्रकारी देखने योग्य है।
(xiii) सिकन्दरा, इसका निर्माण कार्य अकबर ने प्रारम्भ करवाया था, परन्तु यह 1623 ई. में जहाँगीर के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ।

अकबर द्वारा बनवाए गए भवनों की इतिहासकारों ने बड़ी प्रशंसा की है । स्मिथ ने फतेहपुर सीकरी की इमारतों को अभूतपूर्व व पत्थर पर अंकित कहानी कहा है।

(5) जहाँगीर की स्थापत्य कला -

जहाँगीर को चित्रकला से ही अधिक लगाव था, वास्तुकला से नहीं । उसके समय की दो इमारतें प्रमुख हैं ।

(i) एत्मादुद्दौला का मकबरा - यह मकबरा नूरजहाँ ने अपने पिता की याद में 1626 ई. में बनवाया था। यह आगरा में स्थित है और सफेद संगमरमर का बना है।

(ii) जहाँगीर का मकबरा - इसका निर्माण भी नूरजहाँ द्वारा करवाया गया था। यह लाहौर के निकट रावी नदी के किनारे शाहदरा में स्थित है। समाधि पर संगमरमर की पच्चीकारी की गई है।

(6) शाहजहाँ की स्थापत्य कला - भवन निर्माण की दृष्टि से शाहजहाँ का काल मुग़ल काल का स्वर्ण युग था। उसके द्वारा बनवाई गई इमारतों में मौलिकता, सुन्दरता और कोमलता है। इन भवनों में नक्काशी व चित्रकारी विशेष है। शाहजहाँ के काल में निम्नलिखित इमारतों का निर्माण हुआ ।

(i) आगरा के किले में निर्मित इमारतें - शाहजहाँ ने अकबर द्वारा लाल किले में लाल पत्थर से बनवाई गई इमारतों को तुड़वाकर उन्हें संगमरमर से बनवाया। ये इमारतें हैं—दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, मच्छी भवन, शीश महल तथा खास महल, झरोखा दर्शन और मुसम्मन बुर्ज, नगीना और मोती मस्जिद।

(ii) ताजमहल -

- **शाहजहाँ द्वारा बनवाई गई सर्वश्रेष्ठ इमारत आगरा का ताजमहल है,** जिसे उसने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में बनवाया था। इसकी गणना **विश्व के सात आश्चर्यों (अजूबों) में की जाती है। यह 22 वर्षों में बनकर तैयार हुआ। यह इमारत फारसी ढंग से बनी हुई है, फिर भी बहुत-सी शिल्पकला हिन्दू ढंग की है।**

(iii) दिल्ली का लालकिला -

- शाहजहाँ ने 1632 ई. में दिल्ली में **यमुना नदी के** किनारे एक विशाल किले का निर्माण करवाया। इसमें दो दरवाजे हैं। **इसमें दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम और रंगमहल बहुत सुन्दर हैं।**
- दीवान-ए-खास की दीवार पर लिखा है, "अगर फिरदौस बरसरा जमीनस्त हमीनस्त, हमीनस्त, हमीनस्त" अर्थात् धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।

(iv) दिल्ली की जामा मस्जिद - शाहजहाँ ने दिल्ली में लालकिले के निकट जामा मस्जिद बनवाई। यह लाल पत्थर की बनी हुई है।

(v) तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन)- शाहजहाँ ने मयूर की शक्ल का एक सिंहासन बनवाया था।

(7) औरंगजेब की स्थापत्य कला -

- दिल्ली की जिस एकमात्र इमारत से औरंगजेब का नाम सम्बन्धित है, वह है लालकिले में स्थित सफेद संगमरमर की मस्जिद । **औरंगजेब ने 1679 ई. में अपनी प्रिय बेगम रबिया-उद्-दौरानी का**

जिसके फलस्वरूप बलबन उसका पुत्र बुगरा खाँ, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद बिन तुगलक जैसे सुल्तानों ने संगीत को संरक्षण प्रदान किया।

- जब **तुर्क भारत आये तो अपने साथ ईरान एवं मध्य एशिया में पल्लवित समृद्ध अरबी संगीत परम्परा भी लाये।** उनके पास कई नये वाद्य यंत्र थे जैसे रबाब और सारंगी और उनकी एक विशिष्ट संगीत पद्धति थी।
- **मध्यकालीन संगीत परम्परा के आदि संस्थापक अमीर खुसरो थे। सर्वप्रथम उन्होंने भारतीय संगीत में कव्वाली गायन को प्रचलित किया।** खुसरो को तिलक, साजगिरि, सरपदा, औमन, घोर, सनम आदि रागों को प्रचलित करने के कारण उसे नायक की उपाधि प्रदान की गई थी।
- **अमीर खुसरो को सितार तथा तबले के निर्माण का भी श्रेय प्रदान किया जाता है।**
- तुर्क (मुसलमान) अपने साथ सारंगी आदि जैसे संगीत वाद्य लाये परंतु यहाँ आकर उन्होंने सितार तथा तबला जैसे वाद्यों को अपनाया।
- **अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत के महान संगीतज्ञ गोपाल को अपने दरबार में बुलाया तथा अमीर खुसरो को संरक्षण प्रदान किया।**
- फिरोज तुगलक के शासन काल में संगीत के एकीकरण की प्रक्रिया अनवरत चलती रही, इसी समय शास्त्रीय रचना रागदर्पण का फारसी में अनुवाद हुआ।
- जौनपुर के सभी शर्की सुल्तान संगीत प्रेमी थे। **हुसैन शाह शर्की ने राग ख्याल को भारतीय संगीत में सम्मिलित किया। उसके संरक्षण में संगीत शिरोमणि नामक ग्रंथ की रचना हुई।**
- हसन-ए-देहलवी को उसकी उच्च गजलों के कारण उसे **भारत का सादी** कहा गया है।
- मालवा का शासक बाज बहादुर संगीत में रुचि रखता था। ग्वालियर के राजा मानसिंह ने संगीत को संरक्षण प्रदान किया तथा उन्हीं के संरक्षण में मान कौतूहल नामक संगीत ग्रंथ की रचना हुई तथा ध्रुपद का सृजन हुआ। मान कौतूहल में मुस्लिमों द्वारा प्रचलित नयी संगीत पद्धतियाँ भी सम्मिलित की गई थी।
- **चिन्तामण नामक संगीतज्ञ को बिहारी बुलबुल की उपाधि दी गई।** असम में उस समय शंकर नामक संगीतज्ञ का नाम बहुत विख्यात हुआ।
- जौनपुर के सूफी संत पीर बोधन भी उस काल का एक महान संगीतज्ञ था।
- **गुनयाक्त-उत-मुनयास का संकलन भारतीय मुस्लिम विद्वान की भारतीय संगीत संबंधी प्रथम रचना है।** यह जौनपुर के शर्की शासकों के संरक्षण में लिखी गई।
- दक्षिण भारत के विभिन्न शासकों ने भी संगीत कला को संरक्षण प्रदान किया। **बहमनी राज्य के शासकों में से फिरोजशाह और महमूद शाह तथा बीजापुर के यूसुफ आदिलशाह ने संगीत कला को विशेष संरक्षण प्रदान किया।**
- सूफी संतो ने भी सामूहिक गान की परम्परा को स्वीकार करके संगीत कला को लोकप्रिय बनाने में बहुत सहयोग दिया। इस काल में धर्म निरपेक्ष तथा आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार का संगीत एक श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त कर सका था।
- **गजल और कव्वाली दोनों की गायन शैलियाँ सुल्तानों और सूफियों में समान रूप से प्रचलित थी। गजल का संग्रह दीवान कहलाता था।**
- मुहम्मद तुगलक भी बड़ा संगीत प्रेमी था। कहा जाता है कि उसके दरबार में बारह सौ गायक थे जो गाते भी थे और गाने की शिक्षा भी देते थे।
- लोदी वंश के राज्यकाल में भारतीय संगीत ने पुनः करवट ली। इसी काल में जनता में संगीत के प्रति काफी उत्साह था। इसी काल में अनेक मुस्लिम कलाकार पैदा हुए।
- **बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन-शैली को जन्म दिया, जो उत्तर भारत में भी लोकप्रिय हो गई।**

सारांश

- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था।
- पानीपत का युद्ध 21 अप्रैल 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के मध्य हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई। जिसमें बाबर ने पहली बार तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।
- भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने किया।

- बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया।
- 1539 ई. में चौंसा के 'में युद्ध में हुमायूँ को पराजित करने के बाद 'शेरशाह' की उपाधि धारण की।
- अकबर ने 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की।
- अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा का अंत किया तथा जजिया कर भी समाप्त किया।
- अकबर ने 1574-75 ई. में मनसबदारी व्यवस्था की शुरुआत की।
- जहाँगीर ने महरुनिसा को नूरमहल से नूरजहाँ की उपाधि दी।
- 1626 ई. में महावत खाँ ने विद्रोह किया तथा जहाँगीर को बंदी बना लिए, जो कि नूरजहाँ की सहायता से आजाद हुआ।
- जहाँगीर ने तुजुक - ए जहाँगीरी नाम से अपनी आत्मकथा लिखी।
- नूरजहाँ की माँ अस्मत बेगम ने इत्र बनाने की विधि का अविष्कार किया।
- जहाँगीर ने सूरदास को अपने दरबार में आश्रय दिया, जिसने सूरसागर की रचना की।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल किला और जामा मस्जिद तथा आगरा में ताजमहल का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने सिक्खों के नवें गुरु तेग बहादुर की हत्या करवा दी।
- अकबर के तस्वीरखाना में 17 कलाकार थे। जिनमें दसवंत सबसे प्रमुख था। इसने रज्मनामा का चित्रण किया।
- अकबर के दरबार में तानसेन प्रमुख गायक था, जो ध्रुपद गायक था।
- अमीर खुसरो ने सर्वप्रथम भारतीय संगीत में कव्वाली गायन को प्रचलित किया । इन्हें सितार तथा तबले के निर्माण का श्रेय भी दिया जाता है।
- चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन शैली को जन्म दिया तथा उत्तर भारत में लोकप्रिय किया ।

परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक किसे कहा जाता है?

A. बाबर B. हुमायूँ
C. शेरशाह D. अकबर

उत्तर - A

प्रश्न-2. मुगल शासक बाबर द्वारा लिखी पुस्तकें किस भाषा में हैं।

A. फारसी B. उर्दू
C. अरबी D. तुर्की

उत्तर - D

प्रश्न-3. भारत में चार बाग शैली का पहला मकबरा है?

A. हुमायूँ का मकबरा
B. अकबर का मकबरा
C. जहाँगीर का मकबरा
D. औरंगजेब का मकबरा

उत्तर – A

प्रश्न-4. अकबर के काल में महाभारत का फारसी अनुवाद किसके निर्देशन में हुआ ?

A. उतबी B. नाजिरी
C. अबुल फजल D. फैजी

उत्तर - D

प्रश्न-5. तुलसी द्वारा रामचरित मानस की रचना किसके शासन में की गई?

A. अकबर B. अलाउद्दीन खिलजी
C. हर्ष D. कृष्णदेव राय

उत्तर - A

प्रश्न-6. मुगल सम्राट अकबर के समय का प्रसिद्ध चित्रकार था।

A. अबुल हसन B. दसवंत
C. किशनदास D. उस्ताद मंसूर

उत्तर - B

प्रश्न-7. किसने अकबरनामा लिखा है?

A. अकबर B. बीरबल
C. अबुल फजल D. बैजू बावरा

उत्तर - C

प्रश्न-8. अकबर के नवरत्नों में राजस्थान के कौन से कवि थे?

A. चंदबरदाई B. सूर्यमल्ल
C. अबुल फजल D. तानसेन

उत्तर - C

प्रश्न-5. दस्तक शब्द से तात्पर्य है?

A. दंगा B. शुल्क मुक्त व्यापार
C. बंदरगाह D. बाजार

उत्तर - B

प्रश्न-6. प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला के साथ किसने विश्वासघात किया था?

A. मीरजाफर B. मीर कासिम
C. अलीवर्दी खान D. सलीम मुल्ला

उत्तर - A

प्रश्न-7. कर्नाटक युद्धों में अंग्रेजों द्वारा किसे पराजित किया गया?

A. फ्रांसीसियों को B. पुर्तगालियों को
C. इचों एवं पुर्तगालियों को D. इचों को

उत्तर - A

प्रश्न-8. बंगाल का पहला गवर्नर जनरल था?

A. लॉर्ड क्लाइव B. लॉर्ड वारेन हेस्टिंग
C. लॉर्ड जॉन शोर D. लॉर्ड कार्नवालिस

उत्तर - B

प्रश्न-9. भारत का पहला भारतीय गवर्नर जनरल कौन था?

A. B.R. अम्बेडकर B. सी. राजगोपालाचारी
C. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद D. डॉ. एस. राधाकृष्णन

उत्तर - B

प्रश्न-10. निम्न में से किसको आधुनिक भारत के निर्माण के रूप में जाना जाता है ?

A. लॉर्ड कार्नवालिस B. विलियम बैंटिक
C. लॉर्ड डलहौजी D. लॉर्ड कर्जन

उत्तर – c

प्रश्न-11. भारत के औपनिवेशिक काल में अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत किस क्षेत्र से संबन्धित था?

A. रेल B. चिकित्सा
C. शिक्षा D. सिंचाई

उत्तर - C

मुख्य परीक्षा

1. **आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन के धार्मिक शिक्षाओं में आधारभूत अंतर क्या है?**
2. **भारतीय जागरण में स्वामी विवेकानंद का विशिष्ट योगदान क्या था?**

अध्याय – 3

स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

राष्ट्रवाद कांग्रेस की विभिन्न विचार धाराएँ विभाजन के उदय के स्थापना व स्वतंत्रता कारण
उदारवादी उग्रवादी क्रांतिकारी गाँधीवादी समाजवादी

राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण :

(1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग -अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक -राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया । दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- **ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया ।**
- **फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश** के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ । इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया । फलत :एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिशऔपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्यू डार्विन के विचारों से परिचित

हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।

- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया । इसी संदर्भ में यह कहा गया कि "भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेडियों को तोड़ डाला"।

(2) <u>सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन</u> :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परम्परा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) <u>पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन</u> :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे - स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) <u>लिटन और कर्जन की नीतियाँ</u> :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया । लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- **कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया।** तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की | इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) <u>रिपन की नीतियाँ</u> :-

- **वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिलं विवाद सामने आया ।** जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया । वस्तुतः इल्बर्ट **बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया** गया।
- किंतु **अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता** हैं। अतःरिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे हैं और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगो को मनवाया जा सकता है।

<u>कांग्रेस की स्थापना से पूर्व की संस्थाएँ</u> : -

(1) सर्वप्रथम 1836 में बंग भाषा प्रकाशक सभा की स्थापना हुई।

(2) 1838 में बंगाल में "लैंड होल्डर्स सोसाइटी" की स्थापना हुई जो जमींदारों की संस्था थी।

(3) 1851 में "ब्रिटिश इंडियन एसो" की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष राधा कांत देव थे जिन्होंने ब्रिटिश संसद को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उच्च वर्ग के अधिकारियों के वेतन में कमी की जाए तथा नमक शुल्क एवं 'जल शुल्क' में कमी की जाए।

(4) 1866 में ईस्ट इंडिया एसो० की स्थापना दादाभाई नैरोजी ने लंदन में की जिसका उद्देश्य भारत के लोगों की समस्याओं और मांगो से ब्रिटिश

जनमत को परिचित कराना था। और इंग्लैण्ड में भारतीयों के पक्ष में जन समर्थन हासिल करना था।

(5) 1867 में पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना रानाडे एवं गणेश वासुदेव जोशी ने की।

(6) 1875 में शिशिर कुमार घोष ने कलकत्ता में इंडिया लीग की स्थापना की।

(7) 1876 में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस ने इंडियन एसो० की स्थापना की। इस संस्था को कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था कहा जाता हैं ,सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कहा कि यह संस्था संयुक्त भारत की अवधारणा पर आधारित है।

- इसकी प्रेरणा हमे मेजिनी के इटली के एकीकरण के आदर्शों से मिलती है। इंडियन एसो० की वार्षिक बैठक Dec. 1885 में कलकत्ता हुई जिसमें सुरेन्द्र नाथ बनर्जी शामिल थे। इसी कारण वे Dec . 1885 में बॉम्बे में हो रहे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं पाए। इंडियन एसो० के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :

(a) भारत में जनमत तैयार करना

(b) हिंदु-मुस्लिम जनसंपर्क बढ़ाना।

(c) सिविल सेवा का भारतीयकरण करना

- वस्तुतः इस परीक्षा के लिए उम्र सीमा में वृद्धि करना और भारत में भी परीक्षा आयोजित करना। इसके लिए ब्रिटिश सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखने हेतु 'लाल मोहन घोष' को लंदन भेजा है गया ।

(8) 1885 में महास महाजन सभा की स्थापना वीर राघवाचारी, सुब्रमण्यम अय्यर एवं आनंद चारलू ने की।

<u>कांग्रेस की स्थापना</u> :

- कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई ।
- किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।
- कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत अधिकारी A.O. ह्यूम था। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।
- **कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुदीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशनमें अध्यक्ष बने।**

<u>कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद :</u>

(i) <u>सेफ्टी वाल्व सिद्धांत सुरक्षा कपाट सिद्धांत</u>

- **इस सिद्धांत का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने किया।** उन्होंने ह्यूम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न को आधार बनाकर अपनी अवधारणा 'यंग इंडिया' लेखों में प्रकाशित किया और कहा कि कांग्रेस लॉर्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज है।
- वस्तुतः भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए इस संस्था का गठन किया ।दरअसल लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की यह आलोचना उसके उदारवादी नेतृत्व पर प्रहार करने के क्रम में की।

(ii) <u>तड़ित चालक सिद्धांत</u>

- **गोपाल कृष्ण गोखले ने इस सिद्धांत के तहत कांग्रेस की स्थापना को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकारी असंतोष से बचने के लिए भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग किया।**
- वस्तुतः कांग्रेस का संस्थापक यदि इस समय कोई अंग्रेज नहीं होता, तो आरंभ में ही यह संस्था ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकती थी। अतः **ब्रिटिश दमन से बचने के लिए भारतीयों ने ह्यूम का नेतृत्व स्वीकार किया जो एक ब्रिटिश अधिकारी थे।**

<u>समीक्षा / निष्कर्ष : -</u>

- कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में सेफ्टी वाल्व सिद्धांत प्रमाणित नहीं होता क्योंकि वायसराय डफरिन को इसके गठन की सूचना बाद में मिली। साथ ही, ह्यूम एवं डफरिन के संबंध तनावपूर्ण थे।
- इतना ही नहीं डफरिन ने कांग्रेस की आलोचना करते हुए इसे मुट्ठी भर लोगों का समूह कहा। इस आधार पर इसे डफरिन के मस्तिष्क की उपज मानना तार्किक नहीं है।

वस्तुतः कांग्रेस की स्थापना को ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में समझे जाने की जरूरत है।

- कांग्रेस से पूर्व ही अनेक राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी। राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हो रहा था। ऐसे में भारतीय आशाओं एवं समस्याओंको एक मंच द्वारा प्रस्तुत करने के लिए अखिल भारतीय संगठन के रूप में कांग्रेस की स्थापना की गई।

- किसान – मजदूर, महिलाएं बच्चे, हिंदू-मुस्लिम की आंदोलन में सक्रिय भूमिका रही। अतः आंदोलन का सामाजिक आधार व्यापक हुआ।
- आंदोलन ने जनता में यह विश्वास पैदा किया कि देश का प्रत्येक नागरिक दासता से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष कर सकता है।

<u>असहयोग आंदोलन वापसी के संदर्भ में विवाद</u> :

- **चंपारण सत्याग्रह :- 1917 में किसानों के हित के लिए**
- अहमदाबाद मजदूर आंदोलन :- 1918 में मजदूरों के हित के लिए
- खेड़ा आंदोलन :- 1918 में, किसानों के हित में संघर्ष।
- **असहयोग आंदोलन :- 1921-22 में**
- गाँधी इर्विन समझौता :- 1930 में, 11 सूत्रीय मांगें, लगान में 50% की कमी की माँग
- **भारत छोड़ो आंदोलन : 1942 में किसान हित के बारे में बातें।**
- असहयोग आंदोलन वापसी के संदर्भ में यह कहा गया कि गाँधी ने धनी लोगों अर्थात् पूँजीपतियों के हित में आंदोलन वापस ले लिया। गाँधी को यह लगने लगा था कि आंदोलन की बागडोर उनके हाथ से निकलकर लड़ाकू ताकतों (किसान और मजदूर) के हाथ में जाने वाली है अतः जमींदारों के हितों के लिए आंदोलन को अचानक वापस ले लिया। इसी क्रम में बारदोली बैठक में किसानों को अपने कर दायित्व का पालन करते रहने की बात कही गई।

<u>आंदोलन वापसी का वास्तविक कारण :-</u>

- असहयोग आंदोलन वापसी को गाँधी के समग्र राजनीतिक चिंतन एवं रणनीति के संदर्भ में समझे जाने की जरूरत है। वस्तुतः गाँधी ने अहिंसात्मक आंदोलन पर बल दिया था क्योंकि हिंसा से सरकार को दमन करने का अवसर मिल जाता और चौरी-चौरा काण्ड से एक व्यापक जन आंदोलन की संभावनाएँ कम हो गई थी।
- यदि पहला राष्ट्रीय व्यापक आंदोलन आरंभ में ही ब्रिटिश दमन का शिकार हो जाता तो जनता में निराशा फैलती। अतः कांग्रेस कार्यकारिणी एवं अपने ऊपर जिम्मेदारी लेते हुए आंदोलन को दमन एवं निराशा से बचाने के लिए गाँधी ने उसे वापस लिया।
- गाँधीवादी रणनीति की मान्यता थी कि जनआंदोलन लगातार लंबे समय तक नहीं चल सकता क्योंकि जनता की ऊर्जा असीमित नहीं होती।
- असहयोग आंदोलन एक वर्ष से ज्यादा चल चुका था और जनता की ऊर्जा समाप्त होने वाली थी । अतः इस ऊर्जा को आगे के आंदोलन के लिए बनाए रखने और बचाए रखने हेतु आंदोलन वापसी जरूरी समझी गई।
- लड़ाकू ताकतों से डरने और किसान विरोधी होने की बात भी तार्किक नहीं है। वस्तुत असहयोग आंदोलन के पहले चंपारण, अहमदाबाद और खेड़ा में गाँधी ने किसान एवं मजदूरों के हितों के लिए संघर्ष किया था और आगे भी वायसराय इरविन के समक्ष अपनी मांगो में लगान में 50% की कमी की माँग रखी।
- इसलिए गाँधी के किसान विरोधी होने की बात प्रमाणित नहीं होती। साथ ही, आंदोलन के पश्चात् कर रोको आंदोलन चलाए रखने का कोई औचित्य नहीं रह गया था। इसलिए किसानों से कर दायित्व पूर्ति करने की बात की गई।
- इस दृष्टि से आंदोलन वापसी किसी वर्ग के स्वार्थपूर्ति के लिए उठाया गया कदम नहीं था बल्कि व्यापक राष्ट्रीय हितों से जुड़ा हुआ गाँधीवादी रणनीति का हिस्सा था।

असहयोग आंदोलन की वापसी के पश्चात् भारतीय राजनीति :
स्वराज पार्टी :- 1923
साइमन कमीशन :- 1927
नेहरू रिपोर्ट: 1928
लाहौर कांग्रेस अधिबेशन: - 1929
गाँधी की 11 सूत्रीय मांगें : 1930

<u>स्वराज पार्टी (1923)</u> :- असहयोग आंदोलन के वापसी के पश्चात् कांग्रेस के अंदर वैचारिक मतभेद पैदा हुआ। इसी क्रम में परिवर्तनवादी एवं अपरिवर्तनवादी के रुप में कांग्रेस के दो गुट सामने आए।
चितरंजन दास मोतीलाल नेहरू, विठ्ठल भाई पटेल जैसे नेता चली आ रही गाँधीवादी नीति में परिवर्तन चाहते थे। इनका मानना था कि कांग्रेस चुनाव में शामिल हो, और विधायिका में प्रवेश कर

ब्रिटिश सरकार की नीतियों का विरोध करें। यह गुट परिवर्तनवादी कहलाया।

दूसरी तरफ, अपरिवर्तनवादी गुट के नेता जैसे राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालाचारी, वल्लभ भाई पटेल चली आ रही गाँधीवादी नीतियों में किसी भी तरह के परिवर्तन को स्वीकार नहीं किया बल्कि वे गाँधीवादी रचनात्मक कार्यक्रम को चलाए जाने के पक्ष में थे।

ऐसी स्थिति में गया अधिवेशन (दिसंबर 1922, अध्यक्ष सी.आर.दास) में विधायिका में प्रवेश का प्रस्ताव अस्वीकृत हो गया। अतः चितरंजन दास ने एक स्वराज पार्टी का गठन किया। इसके अध्यक्ष चितरंजन दास एवं सचिव मोती लाल नेहरू थे।

स्वराज पार्टी की मांग थी कि शीघ्र ही भारत को डोमिनियन स्टेटस (औपनिवेशिक-स्वराज) दिया जाए और प्रांतों में द्वैध शासन समाप्त कर प्रांतीय स्वायत्तत्ता दी जाए, नागरिक अधिकार प्रदान किया जाए और भारतीय मुद्दे पर विचार करने के लिए एक गोलमेज सम्मेलन बुलाया जाए।

स्वराज पार्टी का उद्देश्य था कि विधायिका में पहुंचकर सरकार का विरोध किया जाए वे सदन में संघर्ष चलाए जाने के पक्ष में थे किंतु 1925 में चितरंजन दास की मृत्यु के साथ ही स्वराज पार्टी का महत्व धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

- स्वराज पार्टी की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के ठहराव के दौर में सरकार विरोधी गतिविधियाँ जारी रखी और 1928 में सार्वजनिक सुरक्षा अधिनियम पर सरकार को पराजित किया।
- इस अधिनियम में प्रावधान था कि अवधित चरित्र वाले विदेशियों को देश से बाहर कर सकती है। वस्तुतः इस समय सरकार भारत में साम्यवादी विचारों का तेजी से प्रसार रहा था और भारत में मौजूद ब्रिटिश सरकार इसे रोकने का प्रयास कर रही थी ।

स्वराज पार्टी ने 1925 ई0 में विठ्ठल भाई पटेल को केन्द्रीय विधानपरिषद् का अध्यक्ष बनाने में सफलता प्राप्त की।

<u>साइमन कमीशन (1927)</u> :- *1919 का अधिनियम पारित करते समय ब्रिटिश सरकार ने यह घोषणा की कि 10 वर्ष पश्चात् इन सुधारों की समीक्षा करेंगे। किंतु नवम्बर 1927 में इस अधिनियम की समीक्षा के लिए एक भारतीय विधिक आयोग के गठन की घोषणा की गई, जिसके अध्यक्ष जॉन साइमन थे। इसीलिए इसे साइमन कमीशन कहा जाता है। इसके सभी 7 सदस्य विदेशी थे।*

साइमन कमीशन को वर्तमान सरकारी व्यवस्था, शिक्षा का प्रसार एवं प्रतिनिधि संस्थाओं के अध्ययन के पश्चात् यह सुझाव देना था कि भारत में उत्तरदायी सरकार की स्थापना कहाँ तक उचित है और भारत इसके लिए कहाँ तक तैयार है?

- आयोग के सभी सदस्यों के विदेशी होने के कारण भारतीयों ने इसका विरोध किया। इनका कहना था कि भारतीय मुद्दे के विचार के लिए आए आयोग में भारतीय सदस्यों का होना जरूरी है। अतः कांग्रेस के 1927 के मद्रास अधिवेशन (अध्यक्ष-मो० अंसारी) में साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया गया।
- इसके बहिष्कार में कांग्रेस, मुस्लिम लीग, किसान मजदूर पार्टी, हिंदू महासभा ने मुख्य भूमिका निभाई जबकि पंजाब के संघवादी पार्टी एवं जस्टिस पार्टी (मद्रास) ने बहिष्कार न करने का निर्णय किया।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी 1928 को बॉम्बे पहुँचा जहाँ उसे काले झण्डे दिखाए गए। इसी क्रम में, लाहौर में इसके विरुद्ध प्रदर्शन कर रहे लाला लाजपत राय पर पुलिस ने लाठियाँ चलायी । जिससे नवम्बर 1928 में उनकी मृत्यु हो गयी ।
- साइमन कमीशन ने 1930 में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की जिसके प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं -

(i) प्रांतों में एक उत्तरदायी सरकार का गठन किया जाए।

(ii) केन्द्रीय विधानमण्डल का पुर्नगठन किया जाए।

(iii) केन्द्र में उत्तरदायी सरकार का गठन न किया जाए क्योंकि अभी इसके लिए उचित समय नहीं आया है ।

<u>नेहरू रिपोर्ट (1928)</u>: -

- भारत सचिव लार्ड बर्केनहेड ने भारतीयों एक ऐसे संविधान निर्माण की चुनौती दी जो सभी दलों एवं गुटों को स्वीकार्य हो ।
- इसी क्रम में, 1928 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति का गठन हुआ जिसमें शोएब कुरैशी, अली इमाम, SC बोस, मंगल सिंह

- अखिल भारतीय राज्य संघ के आदर्शों के अनुरूप एक केंद्रीय सरकार के गठन की मांग को लेकर पूरे भारतवासियों ने सम्पूर्ण समर्थन दिया।
- **तेज बहादुर सप्रू को स्वयं प्रधानमंत्री मैक डोनाल्ड और ब्रिटिश मजदूर पार्टी की तरफ से भी पूर्ण समर्थन मिला और** उसके तद नुसार गाँधी को 1931 के द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए मना किया गया। दुर्भाग्य से लेबर पार्टी 1931 के आम चुनाव में हार गई। बिलिंग्डन की जगह इरविन वायसराय के पद पर नियुक्त किये गये।
- प्रशासनिक सर्किल में इस तरह के परिवर्तन के कारण दूसरे व तीसरे गोलमेज सम्मेलन में संतुष्टिपूर्ण कदम नाम मात्र का रहा, जिसके परिणामस्वरूप भारत सरकार एक्ट 1935 को भारत में कोई विशेष समर्थन प्राप्त नहीं हो सका।
- सप्रू ने लिबरल फेडरेशन से त्याग पत्र दे दिया और स्वतंत्र रूप से भूमिका निभाने लगे। वह 1934 में प्रिवी काउंसिल के एक सदस्य के रूप में नियुक्त किये गये और उसी वर्ष बेरोजगार संयुक्त राज्य समिति के सभापति नियुक्त किये गये ।
- इस समिति में 7 प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले व्यक्ति सदस्य थे। जिन्होंने अपनी रिपोर्ट में व्यावसायिक शिक्षा, बेरोजगार दफ्तर स्थापना करना, आधुनिक वातावरण के अनुरूप शिक्षा को बढ़ावा देना तथा अध्यापकों को उनके परिश्रम के अनुसार पारितोषिक देना आदि को विशाल रूप में विकसित करने के लिए प्रस्तावित समर्थन किया।
- 1941 में वे एक अराजनैतिक पार्टी सभा की अध्यक्षता करते रहे।
- इसमें कांग्रेस व मुस्लिम लीग को भाग लेने के लिए पूर्णतया मनाही थी। इस सभा की मुख्य मांगे थी। भारतीयों के बीच अनेकता में एकता लाना, सत्याग्रह से अलग रहना तथा संसद संस्थान का बहिष्कार करना आदि।
- **सप्रू हिन्दू लॉ रीफोर्म के प्रबल समर्थक थे। तथा उन्होंने उत्तर प्रदेश व बिहार में जमीदारी प्रथा के चलते असामियों द्वारा उत्पीड़न के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की। वह विश्व व्यापार के भारतीय परिषद् के अध्यक्ष नियुक्त किये गये।** जिसके प्रतिष्ठापन समारोह में 1943 में उन्होंने अध्यक्षता भी की।

सरदार भगत सिंह (1907-31)

- भारत के सबसे महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शहीद भगत सिंह भारत देश की महान विभूति हैं, मात्र 23 साल की उम्र में इन्होंने अपने देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। भारत की आजादी की लड़ाई के समय भगत सिंह सभी नौजवानों के लिए यूथ आइकॉन थे, जो उन्हें देश के लिए आगे आने को प्रोत्साहित करते थे।
- भगत सिंह सिख परिवार में जन्मे थे, बचपन से ही उन्होंने अपने आस पास अंग्रेजों को भारतियों पर अत्याचार करते देखा था, जिससे कम उम्र में ही देश के लिए कुछ कर गुजरने की बात उनके मन में बैठ चुकी थी।
- उनका सोचना था, कि देश के नौजवान देश की काया पलट सकते हैं, इसलिए उन्होंने सभी नौजवानों को एक नई दिशा दिखाने की कोशिश की। भगत सिंह का पूरा जीवन संघर्ष से भरा रहा, उनके जीवन से आज के नौजवान भी प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

जीवन परिचय बिंदु	भगत सिंह जीवन परिचय
पूरा नाम	शहीद भगत सिंह
जन्म	27 सितम्बर 1907
जन्म स्थान	जरंवालातहसील, पंजाब
माता-पिता	विद्यावती,सरदारकिशनसिंह संधू
भाई – बहन	रणवीर, कुलतार, राजिंदर, कुलबीर, जगत, प्रकाश कौर, अमर कौर, शकुंतला कौर
मृत्य	23 मार्च 1931, लाहौर

भगत सिंह का आरंभिक जीवन –

- भगत का जन्म सिख परिवार में हुआ था, उनके जन्म के समय उनके पिता किशन सिंह जेल में थे। भगत सिंह ने बचपन से ही अपने घर वालों में देश भक्ति देखी थी, इनके चाचा अजित सिंह बहुत बड़े स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जिन्होंने भारतीय देशभक्ति एसोसिएशन भी बनाई थी, इसमें उनके साथ सैयद हैदर रजा थे। अजित सिंह के खिलाफ 22 केस दर्ज थे, जिससे बचने के लिए उन्हें ईरान जाना पड़ा।

- भगत के पिता ने उनका दाखिला दयानंद एंग्लो वैदिक हाई स्कूल में कराया था। 1919 में हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड से भगत सिंह बहुत दुखी हुए थे, और महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन का उन्होंने खुलकर समर्थन किया था।
- भगत सिंह खुले आम अंग्रेजों को ललकारा करते थे, और **गाँधी जी के कहे अनुसार ब्रिटिश बुक्स को जला दिया करते थे। चौरी चौरा में हुई हिंसात्मक गतिविधि के चलते गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन बंद कर दिया था, जिसके बाद** भगत सिंह उनके फैसले से खुश नहीं थे, और उन्होंने **गाँधी जी की अहिंसावादी बातों को छोड़ दूसरी पार्टी ज्वाइन करने की सोची।**
- भगत सिंह लाहौर के नेशनल कॉलेज से BA कर रहे थे, तब उनकी मुलाकात सुखदेव थापर, भगवती चरन और भी कुछ लोगों से हुई। आजादी की लड़ाई उस समय जोरों पर थी, देशप्रेम में भगत सिंह ने अपनी कॉलेज की पढ़ाई छोड़ दी और आजादी की लड़ाई में कूद गए।
- इसी दौरान उनके घर वाले उनकी शादी का विचार कर रहे थे। **भगत सिंह ने शादी से इंकार कर दिया और कहा "अगर आजादी से पहले मैं शादी करूँ, तो मेरी दुल्हन मौत होगी।"**
- भगत सिंह कॉलेज में बहुत से नाटक में भाग लिया करते थे, वे बहुत अच्छे एक्टर थे। उनके नाटक, स्क्रिप्ट देशभक्ति से परिपूर्ण होती थी, जिसमें वे कॉलेज के नौजवानों को आजादी के लिए आगे आने को प्रोत्साहित करते थे, साथ ही अंग्रेजों को नीचा दिखाया करते थे। भगत सिंह बहुत मस्त मौला इन्सान थे, उन्हें लिखने का भी बहुत शौक था। कॉलेज में उन्हें निबंध में भी बहुत से प्राइस मिले थे।

<u>स्वतंत्रता की लड़ाई (war of Independence)</u>–

- भगत सिंह ने सबसे पहले नौजवान भारत सभा ज्वाइन की। जब उनके घर वालों ने उन्हें विश्वास दिला दिया, कि वे अब उनकी शादी का नहीं सोचेंगे, तब भगत सिंह अपने घर लाहौर लौट गए। वहां उन्होंने कीर्ति किसान पार्टी के लोगों से मेल जोल बढ़ाया, और उनकी मैगजीन "कीर्ति" के लिए कार्य करने लगे। वे इसके द्वारा देश के नौजवानों को अपने सन्देश पहुँचाते थे,
- भगत सिंह बहुत अच्छे लेखक थे, जो पंजाबी उर्दू पेपर के लिए भी लिखा करते थे, **1926 में नौजवान भारत सभा में भगत सिंह को सेक्रेटरी बना दिया गया। इसके बाद 1928 में उन्होंने हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) ज्वाइन कर ली, जो एक मौलिक पार्टी थी, जिसे चन्द्रशेखर आजाद ने बनाया था।**
- पूरी पार्टी ने साथ में मिलकर 30 अक्टूबर 1928 को भारत में आये, साइमन कमीशन का विरोध किया, जिसमें उनके साथ लाला लाजपत राय भी थे। "साइमन वापस जाओ" का नारा लगाते हुए, वे लोग लाहौर रेलवे स्टेशन में ही खड़े रहे। जिसके बाद वहां लाठी चार्ज कर दिया गया, जिसमें लाला जी बुरी तरह घायल हुए और फिर उनकी मृत्यु हो गई।
- लाला जी की मृत्यु से आघात भगत सिंह व उनकी पार्टी ने अंग्रेजों से बदला लेने की ठानी, और लाला जी की मौत के लिए ज़िम्मेदार ऑफिसर स्कॉट को मारने का प्लान बनाया, लेकिन भूल से उन्होंने असिस्टेंट पुलिस सॉन्डर्स को मार डाला। अपने आप को बचाने के लिए भगत सिंह तुरंत लाहौर से भाग निकले, लेकिन ब्रिटिश सरकार ने उनको ढूढने के लिए चारों तरह जाल बिछा दिया।
- भगत सिंह ने अपने आप को बचाने के लिए बाल व दाढ़ी कटवा दी, जो की उनके सामाजिक धार्मिकता के खिलाफ हैं। लेकिन उस समय भगत सिंह को देश के आगे कुछ भी नहीं दिखाई देता था।
- चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजदेव व सुखदेव ये सब अब मिल चुके थे, और इन्होंने कुछ बड़ा धमाका करने की सोची। भगत सिंह कहते थे अंग्रेज बहरे हो गए, उन्हें ऊँचा सुनाई देता है, जिसके लिए बड़ा धमाका जरुरी है।
- इस बार उन्होंने फैसला किया, कि वे लोग कमजोर की तरह भागेंगे नहीं बल्कि, अपने आपको पुलिस के हवाले करेंगे, जिससे देशवासियों को सही सन्देश पहुंचे।
- **दिसम्बर 1929 को भगत सिंह ने अपने साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार की असेंबली हॉल में बम ब्लास्ट किया, जो सिर्फ आवाज करने वाला था,** जिसे खाली स्थान में फेंका गया था। इसके साथ ही **उन्होंने इंकलाब जिंदाबाद के नारे लगाये** और पर्चे बाटें। इसके बाद दोनों ने अपने आप को गिरफ्तार कराया।

16. महात्मा गांधी के आगमन ने भारतीय आंदोलन को किस प्रकार एक जन आंदोलन बना दिया?

17. भारतीय जागरण में स्वामी विवेकानंद का विशिष्ट योगदान क्या था?

18. प्रबोधन युग ने यूरोप के इतिहास की धारा को किस प्रकार प्रभावित किया?

19. प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक साहित्य पर निबंध लिखिए।

20. भारत के विभाजन के लिए उत्तरदायी कारणों की विवेचना कीजिए।

आधुनिक विश्व का इतिहास

अध्याय – I

पुनर्जागरण व धर्म सुधार

पुनर्जागरण (Renaissance in Europe) का शाब्दिक अर्थ होता है, "फिर से जागना" । चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक प्रगति हुई उसे ही "पुनर्जागरण" कहा जाता है ।

चौदहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोप में सांस्कृतिक क्षेत्र में जो आश्चर्यजनक उन्नति हुई, उसे 'पुनर्जागरण' के नाम से पुकारा जाता है।

कथन

- **पं. जवाहरलाल नेहरू** का कथन है कि, "पुनर्जागरण का अर्थ विद्या का पुनर्जन्म तथा कला, विज्ञान और साहित्य तथा यूरोपीय भाषाओं का विकास है।"
- **इतिहासकार स्वेन** का कथन है कि, "पुनर्जागरण से ऐसे सामूहिक शब्द का बोध होता है जिसमें मध्यकाल की समाप्ति तथा आधुनिक काल के प्रारम्भ तक के बौद्धिक परिवर्तनों का समावेश होता है।"
- **प्रो. ल्यूकस** का कथन है कि, "चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के बीच में यूरोप में होने वाले महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तनों को 'पुनर्जागरण' कहते हैं।"
- **इतिहासकार डेविस** के अनुसार, "पुनर्जागरण शब्द मानव के स्वतंत्रता प्रिय, साहसी विचारों को जो मध्य युग में धर्माधिकारियों द्वारा जकड़े व बन्दी बना दिये गये थे, व्यक्त करता है।"
- **सीमोण्ड** के अनुसार, "पुनर्जागरण एक ऐसा आंदोलन है, जिसके फलस्वरूप पश्चिम के राष्ट्र मध्य युग से निकल कर वर्तमान युग के विचार तथा जीवन की पद्धतियों को ग्रहण करने लगे हैं।"
- **फिशर का** कथन है कि, "सर्वप्रथम इटली ने नगरों में प्राचीन यूनानी एवं रोमन कला, साहित्य का पुनः सृजन, मानववादी आंदोलन का प्रारम्भ, स्थापत्य कला एवं चित्रकला का नया स्वरूप, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिवादी सिद्धांतों का विकास, नवीन दृष्टिकोण, वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक आलोचना, छापेखाने का आविष्कार, दर्शन शास्त्र एवं धर्मशास्त्र का नया स्वरूप तथा विवेचन इत्यादि तत्त्वों तथा विशेषताओं को सामूहिक रूप से 'पुनर्जागरण' कहते हैं ।

पुनर्जागरण की प्रमुख विशेषताएँ

1. **स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन-** पुनर्जागरण ने स्वतंत्र चिंतन की विचारधारा को प्रोत्साहन दिया। अब मनुष्य परम्परागत विचारों और मान्यताओं को तर्क की कसौटी पर कसने लगा। अब मनुष्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय हुआ।
2. **व्यक्तित्व का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप मनुष्य को प्राचीन रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं धार्मिक पाखण्डों से मुक्ति मिली। इसके फलस्वरूप मनुष्य के व्यक्तित्व का स्वतंत्र रूप से विकास हुआ।
3. **मानववादी विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण ने मानववादी विचारधारा का प्रसार किया। अब मनुष्य को यह प्रेरणा मिली की उसे परलोक की चिन्ता छोड़कर इस जीवन को आनन्द से बिताना चाहिए। धर्म एवं मोक्ष के स्थान पर मानव-जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाना चाहिए।
4. **देशी भाषाओं का विकास-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप देशी भाषाओं का अत्यधिक विकास हुआ। अब जन-साधारण की भाषाओं में ग्रंथ लिखे गए जिसके फलस्वरूप देशी भाषाओं का बहुत अधिक विकास हुआ।
5. **चित्रकला के क्षेत्र में उन्नति-** पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप चित्रकला के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई।
6. **वैज्ञानिक विचारधारा का विकास-** पुनर्जागरण के कारण वैज्ञानिक विचारधारा का भी विकास हुआ। अब सभी विषयों को तर्क एवं विज्ञान की कसौटी पर कसा जाने लगा।

पुनर्जागरण के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

1. **धर्म-युद्ध-**

- धर्मयुद्ध (क्रूसेड)- ईसाई धर्म के पवित्र तीर्थ स्थान जेरूसलम के अधिकार को लेकर ईसाइयों और मुसलमानों (सेल्जुक तुर्क) के बीच लड़े गये युद्ध इतिहास में 'धर्मयुद्धों के नाम से विख्यात हैं। ये युद्ध लगभग दो सदियों तक चलते रहे। इन धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासी पूर्वी रोमन साम्राज्य (जो इन दिनों में बाइजेंटाइन साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध था) तथा पूर्वी देशों के संपर्क में आये।
- इस समय में जहाँ यूरोप अज्ञान एवं अन्धकार में डूबा हुआ था, पूर्वी देश ज्ञान के प्रकाश से आलोकित थे।
- पूर्वी देशों में अरब लोगों ने यूनान तथा भारतीय सभ्यताओं के संपर्क से अपनी एक नई समृद्ध सभ्यता का विकास कर लिया था। इस नवीन सभ्यता के संपर्क में आने पर यूरोपवासियों ने अनेक वस्तुएं देखी तथा उन्हें बनाने की पद्धति भी सीखी।
- इससे पहले वे लोग अरबों से कुतुबनुमा, वस्त्र बनाने की विधि, कागज और छापाखाने की जानकारी प्राप्त कर चुके थे।
- इन धर्म-युद्धों के कारण यूरोपवासियों को पूर्वी देशों की तर्क-शक्ति, प्रयोग पद्धति तथा वैज्ञानिक खोजों की पर्याप्त जानकारी प्राप्त हुई। उन्हें प्राचीन यूनानी तथा रोमन विद्वानों की पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। जिससे उन लोगों के ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।
- धर्म-युद्धों के कारण यूरोप के पूर्वी देशों से व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। यूरोप के अनेक साहसी लोगों ने पूर्वी देशों की यात्राएँ की तथा अपनी यात्राओं के विवरण लिखे, जिन्हें पढ़ने से यूरोपवासियों के संकीर्ण विचार समाप्त हुए तथा उनके ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि हुई।
- धर्मयुद्धों के परिणामस्वरूप यूरोपवासियों को नवीन मार्गों की जानकारी मिली और यूरोप के कई साहसिक लोग पूर्वी देशों की यात्रा के लिए चल पड़े। उनमें से कुछ ने पूर्वी देशों की यात्राओं के दिलचस्प वर्णन लिखे, जिन्हें पढ़कर यूरोपवासियों की कूप-मंडूकता दूर हुई।
- मध्ययुग में लोग अपने सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप को ईश्वर का प्रतिनिधि मानने लगे थे। परन्तु जब धर्मयुद्धों में पोप की सम्पूर्ण शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद के बाद भी ईसाइयों की पराजय हुई तो लाखों लोगों की धार्मिक आस्था डगमगा गई और वे सोचने लगे की पोप भी हमारी तरह एक साधारण मनुष्य मात्र है।

2. **पूर्व से संपर्क-**

पूर्वी देशों के संपर्क में आने से यूरोपवासी अत्यधिक प्रभावित हुए। अरब लोग स्वतंत्र रूप से चिंतन करते थे। उन्हें अरस्तू, प्लेटो आदि की पुस्तकों का भी ज्ञान था। इस प्रकार अरब लोगों ने यूरोपियनों का ध्यान यूनानी दर्शन, ज्ञान-विज्ञान आदि की ओर आकर्षित किया । यूरोपियन लोगों ने अरबों तथा चीन से कुतुबनुमा, बारूद, कागज, छापेखाने आदि की जानकारी प्राप्त की। इस प्रकार पूर्वी देशों के

अध्याय – 5
विश्व युद्धों का प्रभाव
प्रथम महान युद्ध

प्रथम महान युद्ध के प्रारं होने के कारण

1. **गुप्त संधियाँ** – यद्यपि जर्मनी , रूस और ऑस्ट्रिया में परस्पर संधि हो चुकी थी , किंतु जर्मनी को रूस पर किन्हीं कारणों से विश्वास नहीं हो सकता था । उसने 1879 में ऑस्ट्रिया से एक गुप्त संधि कर ली । 1882 में इटली ने भी जर्मनी एवं ऑस्ट्रिया से संधि कर ली और इस प्रकार ' त्रिराष्ट्रीय गुट ' का जन्म हुआ । बिस्मार्क ने अपनी कूटनीति से रूस और फ्रांस में वैमनस्य बनाये रखा , किंतु 1890 में उसके पतन के साथ रूस और फ्रांस एक - दूसरे के निकट आ गये और 1894 में उनका परस्पर समझौता हो गया । इसी समय इंग्लैण्ड भी अपने एकान्तवास की नीति का त्याग कर जर्मनी का अनुसरण करने लगा । उसने भी अन्य राज्यों से समझौता करके अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया । जब उसका जर्मनी से समझौता आसान न रह गया, तो उसने 1902 में जापान से, 1904 में फ्रांस से और 1907 में रूस से संधि कर ली और इस प्रकार ' त्रिराष्ट्रमैत्री संघ ' का निर्माण हो गया । इन गुटबंदियों के फलस्वरूप यूरोप का दो गुटों में विभाजन हो गया जो एक - दूसरे के घोर शत्रु थे । इन दोनों गुटों के कारण प्रथम महान युद्ध आवश्यक हो गया ।

   प्रो . फे का कथन है कि , " युद्ध का सबसे महत्त्वपूर्ण अन्तर्निहित कारण गुप्त संधियों की प्रणाली थी जिसका विकास फ्रांस और प्रशा के युद्ध के बाद हुआ था । इसने धीरे - धीरे यूरोप की शक्तियों को ऐसे दो विरोधी गुटों में बांट दिया जिनमें एक दूसरे के प्रति सन्देह बढ़ता रहा और जो अपनी सेना एवं नौसेना की शक्ति बढ़ाते रहे । "

2. **उपनिवेशवाद** -यूरोप का प्रत्येक देश विदेशों में अपने उपनिवेश स्थापित करना चाहता था, जिससे अंतर्राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विता का आविर्भाव हुआ । जर्मनी और इंग्लैण्ड में यह प्रतिद्वन्द्विता अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई । वे विश्व के प्रत्येक कोनों में बाजारों को स्थापना के लिए प्रयत्नशील थे । वे एक - दूसरे के विरोधी बनते जा रहे थे । वे अपनी बढ़ती हुई जनसंख्या को बसाने के लिए उपनिवेशों की खोज में थे । यूरोप में औद्योगिक क्रांति प्रारंभ हो चुका था । सभी देशों में उद्योगों का विकास हो रहा था । तैयार माल की खपत के लिए भी उपनिवेशों की आवश्यकता थी । इंग्लैण्ड एवं जर्मनी उपनिवेशों की प्राप्ति के लिए अत्यधिक संघर्ष कर रहे थे । इस दिशा में फ्रांस , इटली , रूस आदि देश भी प्रयत्नशील थे । अतः उपनिवेश के प्रश्नों को लेकर विरोधी गुटों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी ।

3. **सैनिकवाद** – सन् 1871 - 1914 का काल यूरोप में घोर सैनिकवाद के विकास का काल था । अत : यह काल इतिहास में सशस्त्र क्रांति का युग कहा जाता है । इस समय दोनों गुटों में अपनी सेना एवं नौसेना बढ़ाने की दौड़ हो रही थी । प्रत्येक राष्ट्र अपने देश में युद्ध की अनिवार्यता एवं लाभों का प्रचार कर रहा था । जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर इंग्लैण्ड ने यह निश्चय कर लिया था कि यदि जर्मनी एक जहाज बनाता है तो वह छः जहाज बनाएगा । विलियम द्वितीय ने घोषित किया था कि जर्मनी का भविष्य समुद्र पर निर्भर करता है । उसने अपनी सेना के सम्मुख अनेक बार उत्तेजनात्मक भाषण दिये । इससे अन्य देशों में बहुत चिंता उत्पन्न हो गई । 1904 के बाद नौसेना के निर्माण की प्रतिद्वन्द्विता का कारण ही इंग्लैण्ड तथा जर्मनी के बीच कटुता बढ़ने लगी । जर्मनी के पास 8,50, 000 सैनिक थे । रूस के पास भी शांति काल में 15 लाख सैनिक थे । उन देशों ने भी सैनिक संगठन पर जोर देना आरंभ कर दिया । प्रत्येक देश में संगठित वर्ग का विकास हो गया । प्रत्येक देश में नौसेना का प्रभाव बढ़ गया । इस प्रकार सैनिकवाद का वह दौड़ पर्याप्त सीमा तक प्रथम महान युद्ध के लिए अनिवार्य बन चुकी थी ।

4. **जनमत की अवहेलना** - जनता में अत्यधिक असंतोष व्याप्त हो रहा था । यूरोप के राज्यों में अधिकारी वर्ग ही शासन कार्यों को करता था । यही नहीं , व्यवस्थापक विभाग के अनेक कार्यों के बारे में जनता कोई जानकारी ही नहीं रख पाती थी । मंत्रिमंडल को बिना बताएँ हुए गुप्त संधिया कर ली जाती थी । जनवरी , 1906 में इंग्लैण्ड के सर एडवर्ड ग्रे ने फ्रांस के साथ संधि की बातचीत की जो कि पूर्णतः गुप्त रही, जिसका पता संसद को भी 1912 तक न लग सका । सम्राट एवं विदेश मंत्री ही संधियां कर लिया करते थे । इसलिए जनता अपनी सरकार के प्रति विश्वास नहीं रखती थी । जनता की इच्छा कभी युद्ध करने की नहीं होती थी । वह शांति चाहते

थे, लेकिन सम्राटों को साम्राज्य एवं रक्त की पिपासा होती है । जनमत के विचारों के विरोध से भी युद्ध की आशंकाएं समाप्त न हो सकी । इस कारण युद्ध होना अनिवार्य हो गया था ।

5. **कूटनीतिक कारण** - कूटनीति के दाव - पेचों ने भी अंतर्राष्ट्रीय तनाव को बढ़ाया था । बिस्मार्क ने जर्मनी में त्रिगुट की स्थापना की जिसके प्रत्युत्तर स्वरूप ' त्रिराष्ट्रमैत्री संघ ' का जन्म हुआ और उनमें परस्पर कभी बाल्कन प्रायद्वीप को लेकर तथा कभी मोरक्को की समस्या को लेकर तनाव बढ़ता ही गया । यद्यपि कूटनीति प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का कारण न बन सकी , फिर भी युद्ध की परिस्थितियों को जन्म देने में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान रहा । उसने यूरोप के समस्त देशों को संधियों के एक ऐसे जाल में बांध कर रखा था कि एक युद्ध करता , तो दूसरों को स्वतः ही उसमें सम्मिलित हो जाना पड़ता था । गुटबंदियों से पूर्व बड़े - बड़े राष्ट्र सम्मेलनों के द्वारा प्रारंभिक झगड़ों को निपटा लेते थे , किन्तु अपनी ही प्रतिष्ठा को सर्वोपरि समझने वाले तथा औचित्य की भावना से हीन गुटों के निर्माण ने इस कार्य को असंभव बना दिया ।

6. **फ्रांस की प्रतिशोध की भावना** - जर्मनी ने 1871 ई . में फ्रांस के अल्सेस एवं लॉरेन प्रदेशों पर अधिकार कर लिया था । उस समय एक बड़ी हर्जाने की रकम को न देने की अवधि तक अपने व्यय पर जर्मन सेना रखने की शर्ते भी लादी गयी थी । नेपोलियन महान के राष्ट्र का अतीव अपमान किया गया था । फ्रांस को टुकड़ों में विभाजित कर दिया था । अल्सेस एवं लॉरेन उसके दो बच्चों के समान थे, जो माता की गोद में जाने के लिए तड़प रहे थे और माता उनको वक्षस्थल से चिपकाने को तरस रही थी । फ्रांस किसी भी प्रकार अपने अपमान का जर्मनी से प्रतिशोध लेना चाहता था, लेकिन जर्मनी उसे अब तक कुचल रहा था । फ्रांस भी किसी अच्छे अवसर की खोज में था । मोरक्को में भी जर्मनी ने फ्रांस का विरोध किया था , अतः फ्रांस में भी राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करने के विभिन्न उपाय क्रियान्वित किये जाने लगे । इस सबका प्रथम कारण फ्रांस का एकाकी होना था । फ्रांस ने भी मित्रों की खोज करनी प्रारंभ कर दी और उसे शीघ्र ही रूस एवं इंग्लैण्ड मित्र के रूस में मिल गये । जर्मनी की कूटनीति ने फ्रांस के स्वाभियोग को जगा दिया ।

7. **राष्ट्रीयता की भावना** - यूरोपीय देश और विशेषकर फ्रांस में समय समय पर हुई क्रांतियों के परिणामस्वरूप देशों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार होने लगा । इन सब देशों में राष्ट्रीय एवं लोकसत्तावाद की भावनाएं स्पष्ट रूप से प्रकट होने लगी । यूरोप में नवीन एवं प्राचीन प्रवृत्तियां तथा विचारधाराओं में संघर्ष आरंभ हो गया । रूस , जर्मनी और ऑस्ट्रिया आदि में तो वर्तमान शताब्दी के आरंभिक वर्षों तक राजतंत्रीय शासन व्यवस्था स्थापित थी । इन सभी देशों में अनेक जातियों का निवास था और ये सभी जातियाँ अपनी राष्ट्रीयता के लिए निरन्तर संघर्ष करती थी । इतिहासकार सत्यकेतु विद्यालंकार का कथन है , " 1914 - 1918 का महान युद्ध नवीन और प्राचीन प्रवृत्तियों के संघर्ष का ही परिणाम था । उसके कारण नई प्रवृत्तियों की पुराने जमाने पर भारी विजय हुई । यही कारण है कि इस महान युद्ध के बाद जर्मनी और ऑस्ट्रिया आदि विविध राज्यों के वंशाक्रमानुगत राजाओं के शासन का अन्त हो गया और इन सब में लोकतंत्र , गणतन्त्रात्मक राज्यों की स्थापना हो गई । "

8. **आर्थिक साम्राज्यवाद** - प्रथम विश्व युद्ध का एक अन्य मुख्य कारण आर्थिक साम्राज्यवाद था । औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप देशों के उत्पादन में वृद्धि होने लगी थी । परिणामस्वरूप इन देशों से कच्चा माल लाने और अपने यहां के निर्मित माल को बेचने के लिए बाजारों की आवश्यकता अनुभव होने लगी । ऐसा तभी हो सकता था जब उन देशों पर उनका एकाधिकार हो जाए । इसके अतिरिक्त इन देशों पर किसी न किसी प्रकार का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित हुआ जिसके कारण सभी उन्नत राष्ट्र अपने लिए सुरक्षित राज्यों की व्यवस्था करने लगे और इस प्रकार साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का उदय हुआ । इस प्रकार जब विभिन्न राष्ट्रों ने उपनिवेशों की खोज करनी प्रारंभ कर दी तो उनमें आपस में संघर्ष होना स्वाभाविक था । यही कारण है कि आर्थिक हितों से टकराने से युद्ध की संभावनाओं में और भी वृद्धि हो गई ।

9. **अंतर्राष्ट्रीय संगठन का अभाव** - स्पष्ट है कि यूरोपीय राष्ट्र युद्ध के लिए पूर्णरूप से तैयार थे । इन परिस्थितियों एवं वातावरण में उनको कोई युद्ध से रोक सकता था तो वह केवल एक ऐसी संस्था हो सकती थी , जो युद्ध करने वाले राष्ट्रों के मध्य मध्यस्थता करके उनके झगड़ों का शांतिपूर्वक

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET (Graduation)-2023 - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Rajasthan CET Gradu. Level	07 Janu.2023(1st shift)	96 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/uwc5lp

Online order - https://bit.ly/3X6MGue

Call करें 9887809083